ISSN: 2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०७४ जुलाई २०१७

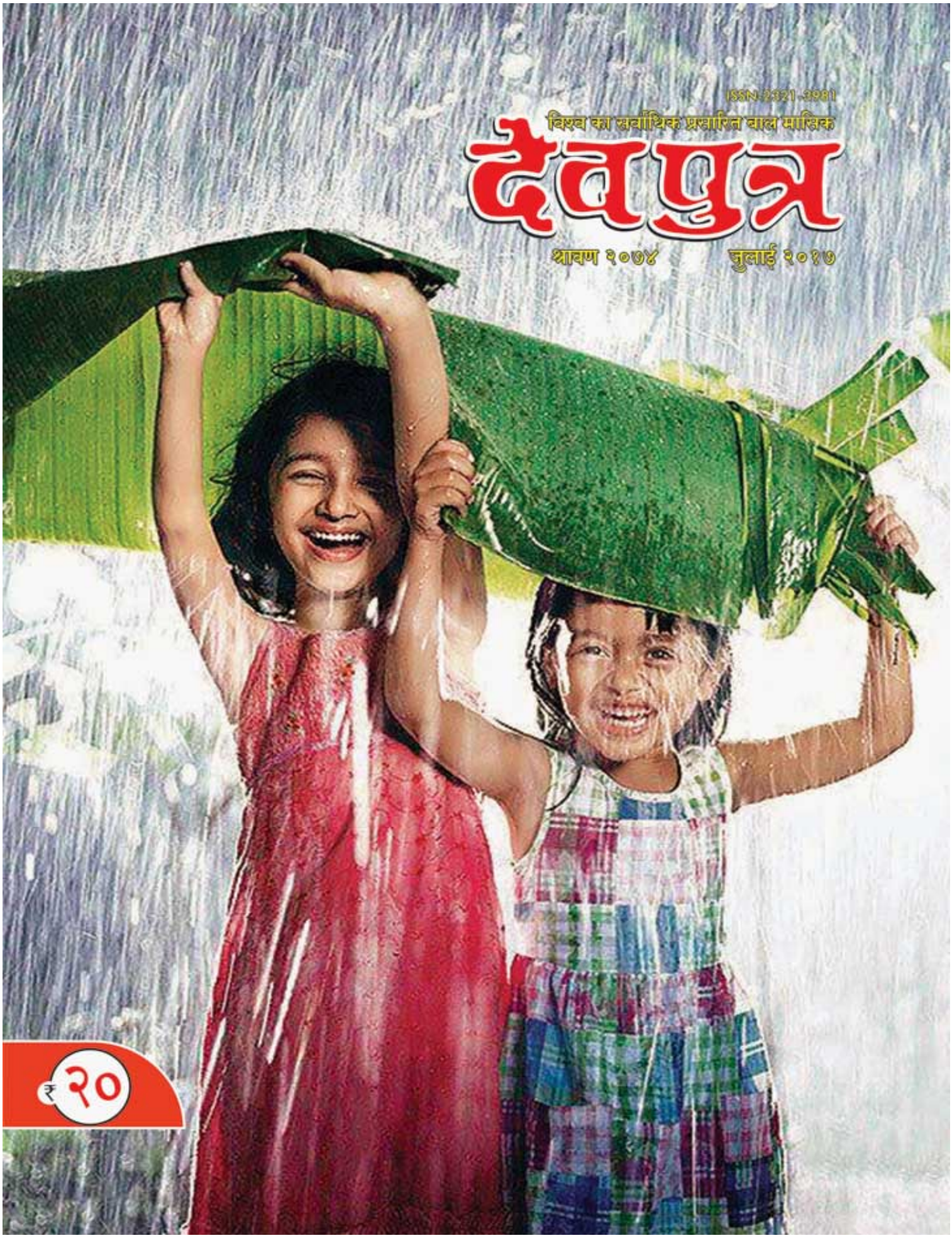

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

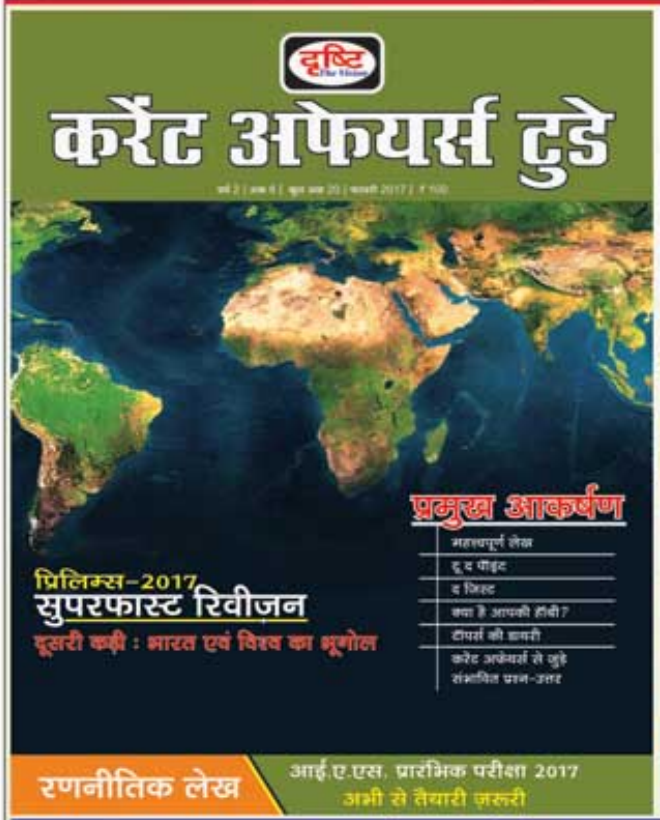

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण २०७४ ▪ वर्ष ३८
जुलाई २०१७ ▪ अंक १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनों!

हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ समाप्त हो गईं। इन छुट्टियों का हम सबने बहुत सदुपयोग किया होगा। आपकी तरह मैंने भी इन छुट्टियों का खूब आनन्द लिया। आप कहेंगे बड़े भैया क्या हमारी तरह बच्चे और विद्यार्थी हैं जो उन्हें गर्मी की छुट्टियाँ मिलेंगी और आनन्द लेंगे?

आपका सोचना सही है अब भला हम बड़ों की कैसी छुट्टी? लेकिन हाँ इन छुट्टियों में मेरा आप जैसे नन्हें-मुन्ने दोस्तों के बीच बहुत जाना हुआ। अब बताईए आप सबके बीच आकर आनन्द तो मिलेगा ही ना? बस, आपकी छुट्टी और मेरा आनन्द। बात आई ना समझ में?

इस बीच ग्रीष्मावकाश शिविरों, मस्ती की पाठशालाओं, संस्कार शिविर, कला शिविर सब में जाने पर मुझे आप लोगों से बहुत कुछ सीखने को मिला। पता है बबिता ने अपनी पिछले वर्ष की पूरी पुस्तकें अपने से छोटी कक्षा के एक ऐसे भैया को गिफ्ट पैक बनाकर दी है जो स्वयं वे पुस्तकें खरीद नहीं पाता। सौरभ ने अपनी पिछली कक्षा की सभी कॉपियों में बचे हुए कोरे पन्ने निकालकर बाईण्डर से ५ रफ कापियाँ बनवा लीं। कविता अपनी नानी से गाँव की दीवारों और फर्श पर बनाए जाने वाले माण्डने बनाना सीखकर आई है।

सविता ने तो अपने घर के पास की सेवा बस्ती में जाकर छोटे बच्चों को स्पोकन इंग्लिश सिखाकर ही अपने २ महीने सार्थक कर लिए। विवेक भैया ने एक बड़ी ड्राईंग शीट पर अपने परिवार और पूर्वजों की जानकारी जुटाकर एक बहुत सुन्दर 'वंश वृक्ष' बना लिया है।

अब इतने अच्छे-अच्छे काम कौन नहीं करना चाहेगा? मैंने तो तय किया है मैं इस तरह के जो काम संभव होंगे इस बड़ी उम्र में भी करने का प्रयास करूँगा। और आप...?

मुझे पत्र लिखकर आने वाले वर्ष का अपना संकल्प अवश्य बताना। अच्छे संकल्पों को आगे के देवपुत्र के अंकों में आपके नाम के साथ प्रकाशित करके हमें बहुत प्रसन्नता होगी।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- आनन्द - सुधा भार्गव ०५
- जल उठे शिक्षा के दीप - श्यामसुन्दर श्रीवास्तव १०
- निवेदिता - शंकरलाल माहेश्वरी १६
- उसे समझ आई - रमाशंकर २४
- घास की फांस -पूनम पाण्डे २७
- पौधा तुलसी का -पद्मा चौगांवकर ३०
- कोयल फिर बोली - सुशील सरित ४०
- बहरूं और बीन - डॉ. मंजरी शुक्ला ४४

कविता

- भारी बस्ता - कृष्णगोपाल सिंह ठाकुर ६
- सवेरा जागा - राजेन्द्र निशेश १३
- पानी आया - वीरेन्द्र निर्झर १५
- माँ वर्षा - कुसुम अग्रवाल ३८
- बादल - डॉ. अशोक गुलशन ४३
- वीर बहुटी - चैनराम शर्मा ४३
- गाँवों में बसता है भारत - महेन्द्र जैन ४७

आलेख

- गुरु पूर्णिमा क्यों? -भालचन्द्र सेठिया १४
- चलो शैवाल फिर से... - शैवाल सत्यार्थी २१
- चमके बिजुरिया - डॉ. विभा सिंह ३४

बाल प्रस्तुति

- जुलाई - राधिका ठाकुर ०७
- जब-जब पानी आता है - गार्गी जमड़ा २६
- कबूतर आया... - सारांश गुप्ता ३२
- रिमझिम रिमझिम - प्रिया देवांगन ४६

चित्रकथा

- निडरता का राज - देवांशु वत्स ३३
- विदेशी कौन? - देवांशु वत्स ३९

विविध

- संस्कृति प्रश्नमाला - ०८
- ढूंढो तो जानें -राजेश गुजर १८
- गाथा वीर शिवाजी की - १९
- छोटे से बड़ा - लक्ष्मीनारायण भाला २०
- कामरूप के संत... - देवेन्द्रचन्द्र दास सुदामा २२
- १०० की खोज में - चाँद मो. घोसी २८
- हमारे राज्य पुष्प - परशुराम शुक्ल २९
- आपकी पाती - ३६
- चित्र पहेली - ३७
- पुस्तक परिचय - ४१
- चुटकुले - ४८
- सांस्कृतिक पहेलियाँ - सीताराम पाण्डेय ५०

आनन्द

कहानी : सुधा भार्गव

''आज तो हमारे लिए बड़ी खुशी का दिन है। हमारे बेटे आनन्द को शिशु वाटिका में दाखिला मिल गया है। अरे राधा तुम किस सोच में पड़ गई।'' कुश ने कहा।

''हम दोनों के कार्यालय जाने का समय और शाला की बस के आने का समय एक ही है। दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। बस स्टॉप तक उसे कौन छोड़ने जाएगा। अकेला तो वह जा नहीं सकता।''

''अरे चिंता न करो माँ जी सब सम्हाल लेंगी।''

''कैसे? वे खुद छड़ी के सहारे चलती हैं। लगता है बच्चे के लिए एक नौकरानी रखनी पड़ेगी।''

''हाँ, इसके अलावा कोई चारा नहीं। पर उसके शाला जाने के पहले दिन तो छुट्टी ले लो। शायद तुम्हारी उसे जरूरत पड़ जाए।''

''कैसे ले लूँ। बैंक की नौकरी लगे एक माह ही तो हुआ है।''

अनमने से आनन्द के पिता कुश चुप हो गए।

जल्दी ही आनन्द की देखभाल के लिए चन्दा मिल गई जो उनके माली की बहन थी। आनंद को एक सप्ताह बाद विद्यालय जाना था पर उल्लास उसके अंग-अंग में फूट पड़ता था। जिससे भी मिलता कहता- क्या तुम्हें मालूम हैं मैं शाला जाने वाला हूँ। दादी के पास बैठा तो अपने सपनों का जाल बुनता रहता । दादी कहती-''बच्चे शाला जाकर, पढ़ लिखकर तुझे बहुत बड़ा आदमी बनना है।''

''हाँ-हाँ दादी, घबराओं नहीं। मैं पेड़ की तरह बहुत बड़ा बनूँगा। फिर तुम मेरी टहनियों पर बैठकर झूले की तरह झूलना।''

''अरे बच्चे, जरा सोच तो- मैं टहनियों तक कैसे पहुँचूँगी?''

''ओहो! दादी माँ

देखो मैं इतना झुक जाऊँगा।'' आनंद उनके पैरों को छूकर कहता।

दादी माँ तो निहाल हो जाती।

''तू और क्या करेगा रे मेरे लिए?''

''मैं– मैं बड़ा होकर एक बड़ी सी चिड़िया बनाऊंगा।''

''चिड़िया! चिड़िया का मैं क्या करूँगी?''

''ओह सुनो तो– उस समय मेरी दादी माँ बैठकर जहाँ चाहेगी उड़ जाएगी फिर इस छड़ी की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

''हाँ–हाँ खूब कहा। वह तो मेरा उड़न खटोला हो गया।''

दादी पोते की बातें खत्म ही न होती अगर राधा आकर उन्हें न टोकती –''आनन्द, कल तो तुम्हें शाला जाना है। जल्दी भी सोना है।''

बिना आनाकानी किए वह माँ के साथ चल दिया।

अगले दिन राधा जल्दी उठी। बेटे को तैयार कर उसने उसकी मनपसंद के पकौड़े बनाए और टिफिन लगा दिया। इतने में चंदा आ गई।

''चन्दा तू समय पर आ गई। शाला की बस भी आती होगी। आनंद को छोड़ने जा।''

आनन्द ठिठक गया और लगा माँ को घूरने।

''क्या हो गया। शाला क्यों नहीं जाता। अभी तो तू खुश नजर आ रहा था।''

''मैं नहीं जाऊंगा।''

''क्यों नहीं जाएगा?''

''आप छोड़ने चलो।''

'' मैं– मैं कैसे जा सकती हूँ। मुझे कार्यालय जाना है। देरी हो जाएगी। चंदा के साथ ही तुम्हें जाना होगा।''

चंदा उसका हाथ पकड़े बाहर निकली और खींचती हुई जाने लगी। वह डरी हुई थी कि कहीं बस न छूट जाए। आनंद का शाला जाने का सारा उत्साह फीका पड़ गया। पहली बार वह इस तरह काफी देर के लिए माँ–बाप से अलग हो रहा था। चाहता था माँ से नमस्ते करते हुए बस में चढ़े और माँ उसकी चुम्बी ले। वह अपने को किसी तरह बस की ओर घसीटा रहा था, लग रहा था मानों दोनों पैरों से एक–एक किलो के पत्थर लटक रहे हैं।

बस स्टॉप पर आनंद ने देखा–कोई दोस्त अपनी माँ के साथ आ रहा है तो कोई बतियाते हुए अपने बाबा का हाथ थामे हुए है। उसके दिल में कुछ चुभ सा गया और उदासी की परतें गहरी हो गईं। वह बस में बैठ तो गया लेकिन जैसे ही बस चली उसकी रुलाई फूट पड़ी।

बच्चों का ध्यान रखने के लिए बस में हमेशा कुंती रहती थी। उसने कुछ देर तक तो फुसलाया–''बेटा! चुप हो जा शाला में तुझे सब बहुत प्यार करेंगे।'' लेकिन जब आनन्द ने चुप होने का नाम नहीं लिया तो गुर्रा पड़ी–

भारी बस्ता

कविता : कृष्णगोपाल सिंह ठाकुर

बस्ता हल्का हो जाए तो,
मैं जाऊं विद्यालय रोज।
मुझसे ज्यादा है मेरी माँ,
मेरे इस बस्ते का बोझ।।

• ग्वालियर (म.प्र.)

''अरे चुप हो जा वरना अभी बस से नीचे उतार दूंगी।''

आनंद भयभीत हो चुप तो हो गया पर शाला तक सिसकियां भरता रहा।

शाला में कुछ बच्चे माँ से अलग होने के कारण दुखी थे, कुछ नए वातावरण से घबराए हुए थे पर आनन्द तो कुछ और ही कारण उदास था। वह सोचने लगा– माँ उसे प्यार नहीं करती। इसीलिए तो वह बस तक नहीं छोड़ने आई। माँ की मजबूरी समझने के लायक उसकी उम्र न थी। बस उसे तो चन्दा की जगह माँ चाहिए थी।

कक्षा में शिक्षिका ने हँस–हँस कर नन्हें–मुन्नों का स्वागत किया। एक दूसरे की तरफ दोस्ती के कोमल हाथ बढ़ने लगे। कुछ देर के लिए आनन्द सब कुछ भूलकर नए साथियों में मग्न हो गया।

टिफिन का समय होने पर आवाज लगी– ''बच्चो! अपना–अपना टिफिन खाओ।'' कुछ ने अपना टिफिन बॉक्स खोला, कुछ की मदद की गई पर आनन्द गुम सा बैठा रहा। पास बैठी एक छोटी सी बच्ची ने अपने टिफिन में से सेव का एक टुकड़ा उठाया और आनन्द की ओर बढ़ाते हुए मैना की सी आवाज में बोली –''भैया! खा लो, भूख लगेगी।'' आनन्द ने उसके स्नेह को देख झट से मुँह खोल दिया और माँ की मीठी–मीठी याद आने लगी।

इतने में घंटी बज गई और आनन्द भूखा ही रह गया।

शाला की छुट्टी होने पर माँ मिलने की खुशी में बच्चों के चेहरे कमल की तरह खिले हुए थे। बस स्टॉप आने से पहले ही आनन्द माँ की एक झलक पाने को खिड़की से झाँक–झाँक कर देख रहा था। माँ की जगह चन्दा को खड़ा देख वह मन ही मन उबल पड़ा।

बस रुकने पर बोला– ''मैं नहीं उतरूँगा।'' बस की आया ने उसे जबर्दस्ती उतारा और चन्दा एक हाथ पकड़कर उसे बाहर की ओर खींचने लगी। इस खींचातानी में उसके कंधे में झटका लगा और वह दर्द से चीख पड़ा। नौकरानी ने उसे गोद में लेना चाहा पर वह तो रोता हुआ उसके हाथों से सरककर भाग निकला। आगे–आगे आनंद पीछे–पीछे चन्दा। बच्चे की तरह तो वह क्या भागती– हाँ भागते भागते हाँफने जरूर लगी।

पोते के रोने की आवाज सुन दादी माँ तड़प उठी।

''दादी–दादी! मेरे हाथ में बहुत दर्द हो रहा है।'' कहकर उससे चिपट गया मानों एक अरसे के बाद मिला हो। प्यार की गरमाई पा वह दादी के बिछौने पर भूखा ही सो गया।

चन्दा भी आनन्द के दर्द को देख परेशान थी। उसे अपनी नौकरी खतरे में नजर आई। उस समय तो उसने जल्दी से जल्दी वहाँ से निकल जाना ठीक समझा। आनन्द के माँ–पिता के आते ही बोली–''मुझे थोड़ा जल्दी घर जाना है।''

''ठीक है, मैं तो आ ही गई हूँ पर कल समय से आ जाना।''

बाल प्रस्तुति

जुलाई

कविता : राधिका ठाकुर

सजाओ बस्ता करो पढ़ाई,
विद्यालय चलें हम आई जुलाई।
मिलकर हम सब करें पढ़ाई,
गर्मी गई अब बारिश आई।।

● ग्वालियर (म.प्र.)

गई।

कुछ देर बाद आनन्द सोकर उठा। पिता ने प्यार से उठाना चाहा पर वह तड़प उठा– ''पिताजी बहुत दर्द...।''

राधा भागी–भागी आई– ''क्या हुआ बेटा!''

''चंदा ने मेरा हाथ बहुत जोर से खींचा। माँ तुम स्टॉप पर मुझे लेने आ जाती तो ऐसा नहीं होता। आप मुझे प्यार नहीं करती हो इसीलिए तो नहीं आईं। माँ, कल मुझे छोड़ने चलोगी...बोलो न माँ।'' आनन्द का गला भर्रा उठा।

बेटे के दुःख से भरी आवाज सुन राधा व्याकुल हो उठी और आनन्द को कलेजे से चिपकाते हुए बोली– ''हाँ बेटा जरूर चलूँगी।''

''मजाक करती हो। कैसे छोड़ने जाओगी? अभी–अभी तो कार्यालय जाना शुरू किया है। नहीं गई तो अधिकारी नाराज हो जाएगे।'' आनन्द के पिता ने मुस्कुराते हुए चुटकी ली।

''नाराज होने दो। मुझे उसकी चिंता नहीं। चिंता है अपने आनन्द की। उसके लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ।'' वाक्य पूरा होते ही खुशियाँ घर की देहली पार कर अंदर आ गईं।

● बैंगलोर (कर्नाटक)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *परशुराम जी ने श्रीराम को जिस धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाने की चुनौती दी, वह धनुष परशुराम को किसने दिया था?*
- *नागादेश की राजकुमारी से उत्पन्न महारथी अर्जुन का पुत्र भी महाभारत के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ था। वह कौन था?*
- *मैक्सिको में पाये जाने वाले प्राचीन मंदिरों में कौन से दो भारतीय शुभचिन्ह प्रचुरता में मिलते हैं?*
- *बावन शक्तिपीठों में से एक हिंगलाज किस क्षेत्र में है?*
- *त्रिपिटक भारत के किस पंथ का धर्मग्रंथ है?*
- *यूनानी कन्या से विवाह करने वाले भारतीय सम्राट कौन थे?*
- *कैकय राज पुरु से हारने के बाद सिकन्दर ने उनसे क्या माँगा?*
- *वे तात्या टोपे के साथी थे। उन्होंने तात्या टोपे का वेश बना कर खुद को गिरफ्तार करवा लिया। अंग्रेजों ने उन्हें ही तात्या समझ कर फाँसी दे दी। वे श्रेष्ठ स्वातंत्र्य योद्धा कौन थे?*
- *मेवाड़ राजवंश की स्थापना करने वाले सम्राट कौन थे?*
- *डूँगरपूर से कुछ दूर सोम नदी के किनारे भगवान शंकर का कौन सा प्रसिद्ध मंदिर स्थित है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

डॉ. मालती शर्मा पुरस्कृत

पुणे। सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का प्रतिष्ठित फणीश्वर नाथ रेणु पुरस्कार उनके लोक साहित्य ग्रंथ 'परम्परा का लोक' पर प्राप्त हुआ। आप १९९१ में भी ललित निबंध की कृति 'सौ फिर भादौं बरसी' के लिए आ. रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार से पुरस्कृत हो चुकी हैं।

पाच धातुओं की सफाई
बस एक ही चीज में समाई !
The Original & No.1 Brand
NEW
Pitambari
Shining Powder
With Extra Power
& Pleasant Fragrance
COPPER
BRASS
ALUMINIUM
IRON
SILVER
१०, ३०, ५०, १००, २००,
५०० ग्रा. और १ किलो में उपलब्ध
पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
हर मौके को महकाएं, प्रसन्नता लाएं !
फूलों की 'प्राकृतिक' सुगंध
जो खुशियाँ फैलाएं।
देवभक्ती
नक्षत्र सिरिज
रोहिणी
4 in 1
Made With
NATURAL
Extract
22 , 100 ग्राम,
4 in 1 & 7 in
में उपलब्ध
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Thane: 022 - 6703 5555, CRM No.: 022-6703 5564, 5699, CIN : U24239MH1989PTC051314.
Toll Free: 180030701044 ,www.pitambari.com

जल उठे शिक्षा के दीप

कहानी : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

कोमल वन चारों ओर से कटीली झाड़ियों से घिरा था। यह हरा–भरा, घना और चारों तरफ से सुरक्षित था। इसमें तरह–तरह के पशु–पक्षी हिल मिल कर प्रेम भाव से रहते थे। सभी में भाई चारा था। किन्तु कोमल वन के पशु पक्षी अशिक्षित, नासमझ एवं भोले भाले थे। जिसके कारण उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। फिर भी वे शिक्षा के महत्व को नहीं समझते थे। अशिक्षित होने से लोग उन्हें मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते थे।

कोमल वन के पशु–पक्षियों के बच्चे सारा दिन उछल–कूद, शरारतें, मटरगश्ती और गपशप करते रहते थे। दिन यूँ लड़ने–झगड़ने में गुजार देते थे। इससे उनका समय तो बर्बाद होता ही था, लड़ने–झगड़ने, गलत संगत करने और गलत चीजें खाने पीने से उनकी सेहत पर भी बुरा असर पड़ता था। उसी जंगल में आसी नाम की एक हिरणी रहती थी। आसी कोमल वन की पढ़ी लिखी, समझदार एवं जागरूक नागरिक थी। उसका स्वभाव मृदुल एवं स्नेह पूर्ण था। वह सभी से मीठा बोलती थी। उसके प्रेम व्यवहार एवं मीठी बोली में एक जादू था। सुनने वाला तुरंत उससे प्रभावित हो जाता था। अपने वन के लोगों का अशिक्षित होना उसे बहुत खटकता था। जब पड़ोसी जंगल के लोग कोमल वन के लोगों को अशिक्षित, असभ्य एवं गंवार कहते थे तो उसे अच्छा नहीं लगता था। आसी बहुत आशावादी थी। उसने मन ही मन एक साहसी कदम उठाने का संकल्प लिया। कार्य थोड़ा कठिन अवश्य था, लेकिन जिनके मन में नवीन उत्साह, कार्य के प्रति सच्ची लगन एवं हालातों से जूझने की क्षमता होती है वे कठिनाइयों की परवाह नहीं करते। उसने जंगल में कोमल बाल विद्यालय नाम की एक शाला खोली। वह घर घर जाकर लोगों से मिलती, समझाती और उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक करती थी।

धीरे – धीरे उसकी मेहनत रंग

लाने लगी। शाला १० बजे सुबह से सांय पांच बजे तक खुलती थी। आसी पूरा दिन बच्चों के साथ मेहनत करती, उन्हें पढ़ाती, समझाती, हँसाती और खिलाती रहती थी। वह जानती थी कि छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ हँसाना, खिलाना भी उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। उसने बच्चों के खेलने, कूदने के साथ ही साथ नाचने-गाने के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था कर रखी थी। नृत्य और गायन के लिए तबला, हारमोनियम, कांगो, सितार, बांसुरी एवं ढोलक आदि आवश्यक उपकरण भी जन सहयोग से जुटा लिए थे।

आज रविवार था, शाला की छुट्टी थी। आसी सुबह से ही कोमल वन में सम्पर्क करने के लिए निकल पड़ी। ''भालू काका नमस्ते।'' आसी ने हाथ जोड़कर विनम्रता से कहा। नमस्ते, नमस्ते आसी बिटिया, कहो कैसी हो?'' भालू काका ने कहा। ''ठीक हूँ काका, एक काम से आपके पास आई हूँ। आदर एवं विनम्रता के साथ आसी ने कहा।'' कहो-कहो क्या बात है बिटिया?'' काका ने जिज्ञासा से पूछा- ''काका आपके चिन्टू-मिन्टू सारा दिन क्या करते रहते हैं?'' आसी ने पूछा। काका मुस्कुराते हुए बोले- ''बच्चे हैं खेलते खाते, उछलते कूदते और घूमते-घामते रहते हैं।'' आसी ने सहजता से समझाया-''काका सारा दिन खेलने कूदने, गप्पें मारने और मटर गश्ती करने से समय बर्बाद नहीं होता?'' ''होता तो है।'' हाँ में सिर हिलाते हुए काका बोले। ''ऊट पटाँग खाने पीने से बीमार हो सकते हैं।'' आसी ने कहा। ''बात तो तू सही कहती हैं।'' आसी की ओर देखकर काका सहमति से सिर हिलाकर बोले। ''गलत संगत में पड़ने के कारण लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है और बुराई भलाई भी।'' आसी धैर्य पूर्वक अपनी बात कह रही थी। काका को कुछ-कुछ समझ में आ रहा था। वे आसी की ओर देखकर कहने लगे-''बिटिया तो हमें क्या करना चाहिए?''

''काका कल सुबह दस बजे से चिन्टू मिन्टू को शाला भेजिए। इससे उसके समय का सदुपयोग भी होगा और कुछ पढ़ना लिखना भी सीखेंगे।'' आत्मविश्वास के साथ आसी ने कहा। ''ये तो बहुत अच्छी बात है बिटिया। चिंटू-मिंटू को तो हम भेजेंगे ही, जंगल के सभी बच्चों को शाला भेजने के लिए समझाएँगे।'' उत्साह एवं खुशी से उछलते हुए काका ने कहा था। ''तो चलो मेरे साथ हिन-हिन घोड़े और लम्बू ऊँट के यहाँ। उनके बच्चे भी शाला नहीं जाते।'' आसी अपना बैग लटकाते हुए बोली। ''हाँ-हाँ, क्यों नहीं अभी चलता हूँ।'' काका अपना अँगौछा

सिर पर बाँधते हुए बोले।

आसी की शाला में अब तक बहुत बच्चों के प्रवेश हो चुके थे। आसी ने मेहनत की विद्यालय की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। अपने बच्चों में संस्कार, समझदारी, बोलचाल, उठने बैठने का ढंग देखकर कोमल वन के सभी पशु पक्षी संतुष्ट व प्रसन्न थे। कोमल वन में अकडू सियार और झगडू भेड़िया भी रहते थे। उनका काम था सारा दिन शरारतें करना, लड़ना, झगड़ना, मारना, पीटना लोगों को परेशान करना और दूसरों का नुकसान करना। दोनों जंगल के सीधे-सीधे और भोले भाले बच्चों को अपने जाल में फँसाकर दूसरों के खेतों और बागों में ले जाते थे। वहाँ खाते कम नुकसान अधिक करते थे। कभी-कभी स्वयं तो बचकर निकल जाते और उन्हें पकड़वा देते थे। लेकिन शाला खुल जाने से अब उनके साथ कोई नहीं जाता था। इससे दोनों बहुत परेशान रहने लगे थे। एक दिन झगड़ू भेड़िया बोला- ''अकडू शाला खुल जाने से तो अपनी सारी खुशियाँ ही चली गईं। अब कोई हमारे पास नहीं आता।''बात तो तू सही कह रहा है। सारा मजा किरकिरा हो गया। कुछ सोचते हैं।'' माथे पर अंगुलियाँ फिराते हुए अकडू बोला था। थोड़ी देर बाद चहक उठा। ''अरे झगडू भाई, तुम्हारे मौसी के लड़के खोटू मोटू किस काम आएंगे।''

''कैसे?'' जिज्ञासा से झगडू ने पूछा- ''वे तो बहुत झगड़ालु, ऊधमी और मारपीट में माहिर हैं।'' मुस्कुराते हुए अकडू ने कहा, ''यही तो अपनी समस्या का हल है। आसी के शाला में उनका नाम लिखवा दो बस...मार..धाड़...लड़ाई... झगड़े...चीख-पुकार....तोड़-फोड़...रोना...चिल्लाना...। और फिर बेचारी आसी... उन्हें क्या सम्हाल सकेगी। और...शाला...बंद। वाह मेरे अकडू, झगडू उछल पड़ा। ''मैं आज ही मौसी के घर जाता हूँ।''

दूसरे दिन सुबह से ही अकडू और झगडू शाला के पास एक घनी झाड़ी में छिपकर बैठ गए। वे शाला से मार-धाड़, चीखने-चिल्लाने, तोड़-फोड़ और रोने धोने की आवाजों के आने का इंतजार करने लगे। इंतजार करते-करते उन्हें शाम हो गई। लेकिन उन्हें मारने-पीटने, चीखने-चिल्लाने की कोई आवाज सुनाई नहीं दी। हाँ, इस बीच नाचने गाने, पढ़ने-पढ़ाने, हँसने-खिलखिलाने की आवाजें जरूर आती रहीं। इन आवाजों को सुनकर उनका मन भी कुछ-कुछ बदलने लगा। उनका मन भी सभी बच्चों के साथ खेलने कूदने, नाचने गाने और पढ़ने के लिए ललचाने लगा। शाम के पाँच बज गए।

टन... टन... टन... टन... घण्टी बजी। सभी बच्चे उछलते कूदते शाला से बाहर निकलने लगे। बाहर दरवाजे के पास आसी खड़ी हुई थी। सभी बच्चे आसी के पैर छूते, नमस्ते करते और आगे बढ़ जाते। कुछ देर बाद खोटू और मोटू भी विद्यालय से बाहर निकले। अकडू और झगडू के होठों पर विषैली मुस्कान तैर गई। झगडू बोला- ''देख अकडू अब होगा कुछ धमाल...।'' लेकिन यह क्या खोटू-मोटू आसी के पैर छूकर बोले- ''दीदी, शाला में बहुत अच्छा लगता है। कल से मैं अपने मामा के लड़के बेटू को भी साथ ला सकता हूँ?''

''हाँ-हाँ क्यों नहीं, जरूर मेरे प्यारे खोटू-मोटू।'' उसी उनके सिर पर हाथ रखकर मुस्कुराते हुए बोली। अकडू और झगडू ने एक दूसरे की ओर देखा और दोनों चल दिए आसी के पास।

''आसी दीदी, हमें क्षमा कर दो।'' दोनों आसी के पैरों पर गिर पड़े।'' ''क्या बात है अकडू और झगडू। तुम तो बहुत अच्छे बच्चे हो, और बहादुर भी'' उन्हें उठाते हुए आसी ने कहा था। दोनों ने सारी बातें बताते हुए क्षमा माँगी। हाथ जोड़कर बोले- ''दीदी क्या हम लोग भी कल से शाला आ सकते हैं।'' दोनों की आँखों में पश्चाताप के आँसू थे। आसी ने प्यार से उनके सिर पर हाथ रखते हुए कहा- ''सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। तुम लोग कल से शाला आ सकते हो।'' तीनों एक दूसरे की और देखकर मुसकराने लगे।

● लहार (म.प्र.)

सवेरा जाग

कविता : राजेन्द्र निशेश

सुन्दर शाँत सबेरा जागा
रवि किरणें मुस्काई।
इन्द्रधनुषी पंख फैलाए
तितली रानी आई।
हरी भीगी लताएँ चहकी
ओस ने ली बिदाई।
भँवरों की गुनगुन को सुनकर
कली कली हरषाई।
कोयल गाती निज मस्ती में
चिड़िया चिहुक लगाई।
बैठ पेड़ पर फल हैं खाते
हरियल मिट्ठू भाई।
कल-कल धारा बहती सरिता
हर्षित धरा-नहाई।
आनन्दित करती प्रकृति ने
ममता सकल लुटाई।

● चण्डीगढ़

आलेख : भालचन्द्र सेठिया

गुरु पूर्णिमा क्यों?

महर्षि पाराशर और मछुआरे की पुत्री सत्यवती के पुत्र का नाम श्रीकृष्ण था। द्वीप पर पैदा होने के कारण उसे कृष्ण द्वैपायन कहा जाता था।

अपने पूर्वजों की भाँति कृष्ण द्वैपायन भी अत्यंत मेधावी, तपस्वी परमात्मा की खोज में निरन्तर संलग्न रहने वाले थे। वे भी उस विद्या के अभ्यार्थी थे जिसे प्राप्त कर लेने पर कोई भी व्यक्ति संसार के द्वन्द्वों से मुक्त हो सकता है। इसी के विषय में कहा गया है ''सा विद्या या विमुक्तये'' और इसी विद्या को वेद कहते हैं। वेद अनादि और अनन्त है। वेद सृष्टि से पूर्व भी था, आज भी है और प्रलय के बाद भी रहेगा। वह अविनाशी है। किन्तु उसे जानने अथवा प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक की भांति कठोर साधना करनी पड़ती है।

कृष्ण द्वैपायन से पूर्व सारे ऐसे साधकों ने जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, ने इस वेद को जाना उसे साक्षात् देखा और पूर्ण रूप से मुक्त जीवन जिया। परमात्मा का साक्षात्कार करने के कारण उन्हें दृष्टा भी कहा जाता है। इन ऋषियों ने अपने जिज्ञासु शिष्यों को मौखिक रूप से सुनाकर यह विद्या प्रदान की। सुन-सुनकर यह विद्या अन्यान्य साधक ऋषियों को प्राप्त हो रही थी और इसीलिए इस विद्या को ''श्रुति'' भी कहा जाता है।

महर्षि कृष्ण द्वैपायन ने इन ऋषियों के द्वारा बतलाए गए ज्ञान को संकलित करके चार भागों में संहिताबद्ध किया । इनके नाम - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। इनमें से प्रत्येक का विषय वेद ही है। वेद सम्पादन का कार्य कृष्ण द्वैपायन ने व्यास रूप से अर्थात् विस्तार से किया था, इसलिए अब लोग उन्हें **वेदव्यास** कहने लगे।

वेद को व्यास के रूप में संहिताबद्ध करने के पश्चात् व्यास जी की इच्छा हुई कि इस विशद ज्ञान को संक्षेप में विद्वानों के लिए प्रस्तुत कर दिया जाए। इसलिए उन्होंने उस सम्पूर्ण विद्या को ब्रह्म सूत्र के रूप में लिख दिया। ब्रह्म सूत्र को व्यास सूत्र भी कहते हैं। इसके बाद उन्होंने इस सम्पूर्ण ज्ञान को एक विशिष्ट शैली में एक ग्रंथ में समाहित कर दिया। इस ग्रंथ को पंचम वेद कहते हैं, जिसे हम महाभारत के रूप में जानते हैं। भगवत्गीता इसी महान ग्रंथ का एक भाग है। किन्तु दूरदृष्टा महर्षि वेदव्यास वेदों के गूढ़ ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना चाहते थे और इसलिए पहले उन्होंने अत्यंत रोचक कथाओं के माध्यम से सत्रह पुराण लिख डाले। फिर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ और अंत में उन्होंने अठारहवां पुराण श्रीमद्भागवत की रचना की। यह ग्रंथ वास्तव में ब्रह्म का अथवा श्रीकृष्ण का साक्षात् शब्द विग्रह है।

ब्रह्म सूत्र, उपनिषद और भगवद्गीता प्रस्थानत्रयी ही कहलाते हैं। और इनमें ही चारों वेदों के अन्तिम भाग या ज्ञानकाण्ड का मूल स्वरूप वर्णित है और इसलिए इसे ही वेदान्त कहते हैं।

सम्पूर्ण सनातन वैदिक संस्कृति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित इन ग्रंथों पर आधारित आदि शंकराचार्य रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, बल्लभाचार्य आदि अनेक आचार्यों, दार्शनिकों, महात्माओं, संतों आदि ने इन्हीं के आधार पर सम्पूर्ण मानवता को ज्ञान का प्रकाश दिया है। ज्ञान,कर्म और भक्ति के मार्ग इन्हीं ग्रंथों से निकले हैं। षड् दर्शन इन्हीं ग्रंथों की उत्पत्ति हैं। चैतन्य महाप्रभु, कबीर, नानक, संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, सूरदास, तुलसीदास, मीरा आदि कई का समाज को प्रदेय वेदव्यास द्वारा रचित इन्हीं ग्रंथों का प्रसाद है। भारत की किसी भी भाषा के लेखक, कवि, कलाकार अथवा संगीतकार का आदि स्रोत यही ग्रंथ हैं। जो कुछ सनातन वैदिक संस्कृति की मान्यताएँ हैं, वे सब इन्हीं से निकली हैं। सारे विश्व में भारत की पहचान इन्हीं ग्रंथों के विचार अर्थात् वेदान्त से होती है।

चूँकि हमने सब कुछ महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रणीत ग्रंथों से सीखा और प्राप्त किया है। इसलिए वे ही सनातन वैदिक संस्कृति के आदि गुरु हैं और इसलिए युगों से हम उनके जन्मदिन आषाढ़ की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं।

महर्षि वाल्मीकि और व्यास द्वारा सम्पादित एवं रचित ये प्राचीनतम ग्रंथ ही समस्त भारतीय वाङ्मय के आदि स्रोत हैं। भारत की किसी भी भाषा के किसी भी विद्या में लिखित साहित्य के मर्म को समझने के लिए इन ग्रंथों का सम्यक् प्रकारेण अनुशीलन नितान्त आवश्यक है।

● **कानपुर (उ.प्र.)**

पानी आया

कविता : डॉ. वीरेन्द्र निर्झर

पानी आया... पानी आया....
गरज रहे बादल घनघोर
ठमक ठमक कर नाचे मोर
पी पी रटने लगा पपीहा
झन झन झन झींगुर का शोर
दूर कहीं मेढ़क टर्राया
पानी आया... पानी आया...

रिमझिम रिमझिम बूँदे आईं
खुशियों की सौगातें लाईं
पेड़ों के पत्तों ने भरभर
झूम झूम तालियाँ बजाईं
गर्मी का हो गया सफाया
पानी आया...पानी आया...

भीग रहे कुछ छाता ताने
रानू मोनू लगे नहाने
छप छप छप छप करते फिरते
सपने जैसे हुए सयाने
बच्चों का मन है हर्षाया
पानी आया... पानी आया...

• बुरहानपुर (म.प्र.)

श्री गोपाल माहेश्वरी को मातृशोक

देवपुत्र के कार्यकारी सम्पादक श्री गोपाल माहेश्वरी की मातुश्री श्रीमती विमलादेवी माहेश्वरी का विगत ४ जून २०१७ को दुःखद निधन हो गया। श्रीमती माहेश्वरी अत्यंत धर्मपरायण और सात्विक व्यक्तित्व की धनी रहीं। सामान्य गृहस्थ जीवन में रहकर भी वे प्रख्यात रसायनाचार्य एवं वैद्य श्रीरामजी माहेश्वरी की अर्द्धांगिनी होने के कारण स्वयं आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के उपायों का चलता फिरता कोष थीं। वे अपने पीछे श्री गोपाल, घनश्याम जी, डॉ. गोविन्द जी एवं लोमश जी चार भ्राता एवं दो बहनों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

ईश्वर उनकी दिव्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें और परिवार को यह दारूण दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।
देवपुत्र परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

।। ४ जुलाईः विवेकानंद पुण्यतिथि ।।

निवेदिता

कहानी : शंकरलाल माहेश्वरी

शहर की छोटी पुलिया के दाहिनी और अंतिम छोर पर मेरा मकान है। घर में दादा दादी के अलावा मेरी माँ और साथ–साथ रहते है। पिताजी तो मेरे जन्म से पहले ही भगवान के घर चले गए। मेरा नाम निवेदिता है। मेरे घर के पड़ोस ही में मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. गुप्ता का क्लीनिक हैं जहाँ अक्सर बड़े बूढ़े ही इलाज के लिए आते हैं। डॉ. गुप्ता सेवा निवृत्ति के बाद ही बुजुर्गों के रोगोपचार में ही सेवा सुख का अनुभव करते हैं।

इसी औषधालय से सटे हुए खाली वर्गाकार अहाते में एक छायादार वट वृक्ष है। जहाँ एक लड़का प्रातः ठीक आठ बजे आता है और वृक्ष के नीचे जूते गांठने की दुकान सजा देता है। गीत गुनगुनाते हुए अहाते की साफ सफाई करता है और ग्राहकों के बैठने के लिए एक रंगीन चटाई बिछा देता है। जूतों पर पालिश करानी हो या फटे जूतों पर पैबन्द लगाना हो तो शहर के लोग अक्सर इसी के पास आते है क्योंकि इससे अपने काम के साथ ही मधुर गीतों का आनन्द भी ले सकते हैं। साथ ही जीवन में साफ सफाई का महत्व भी बताते नहीं थकता। कतिपय रोगों के घरेलू नुस्खे भी बताता रहता है।

दसवीं कक्षा तो इसने अनाथालय में रहते हुए ही पास कर ली, आगे की पढाई उस समय थम गई जब अनाथालय से उसकी छुट्टी कर दी। जब यह सात वर्ष का था तभी इसके माता–पिता का सड़क दुर्घटना में देहान्त हो गया था। पहले इसने अनाथालय की शरण ली तो बाद में अपने मामा के घर रहकर अपना पुश्तैनी धंधा सीख लिया और यहाँ अपनी यह दुकान खोल ली। रोहित नाम है इसका।

खाली समय में वह अक्सर डॉ. गुप्ता से बतियाता रहता। उनके औषधालय की भी साफ सफाई कर देता, मरीजों की सेवा चाकरी का भी समय निकाल लेता। डॉ. गुप्ता उसकी दिनचर्या से प्रभावित थे। एक दिन डॉ. गुप्ता भी अपने जूतों की मरम्मत के लिए इसकी दुकान पर बैठ गए। बातें होने लगी तो रोहित डॉ. साहब से कहने लगा ''डॉ. साहब आपके जूतों की यह जोड़ी सलामत रहे। कभी कभी मुझसे इसी तरह जाँच करवा लिया करें। यदि छोटी–मोटी बीमारी हुई तो हाथोंहाथ उसी समय ठीक हो जाएगी। यदि बीमारी बढ़ती गई तो फिर मेरे बस की बात नहीं रहेगी। सही समय पर इलाज नहीं करवाने पर प्राण पखेरू भी उड़ जाते हैं। अभी तो साधारण चीर फाड़ से ही काम चल जाएगा। यदि घसीटते ही रहे तो बीमारी असाध्य हो जाएगी। मेजर ऑपरेशन में खर्चा भी अधिक होगा और जीने की गारंटी भी समाप्त हो जाती है।

कल ही रामू दादा अपने जूते रखकर गए मृतः प्रायः हो गए। हालत इतनी खराब है कि ऑपरेशन भी करता हूं तो प्राणांत की संभावना है। मैंने तो दादा से कह दिया ऑपरेशन करना मेरा काम है। हालत इतनी खराब हैं कि अंत में तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट देखने को मिलेगी।''

डॉ. गुप्ता ने रोहित के मुँह से जब जूतों के संबंध में

यह चिकित्सकीय विश्लेषण सुना तो वे आश्चर्य करने लगे। मनोविश्लेषण के आधार पर सोचने लगे– ''कुछ तो है इस लड़के में जो डॉक्टरी गुण धर्म से मेल खाता है।'' रोहित में एक डाक्टर की सम्पूर्ण सम्भावनाएं भरी पड़ी है। इसके भीतर का एक कुशल डॉक्टर बाहर आने को बेताब है। उस डाक्टर को बाहर निकालने की आवश्यकता है बस। यह एक उच्चकोटि का डॉक्टर बनकर चिकित्सा जगत में अपना कीर्तिमान स्थापित कर सकता है। इसकी अन्तर्निहित शक्ति व प्रतिभा को उजागर करने की आवश्यकता है। इसे थोड़ा सहारा चाहिए। डॉ. गुप्ता ने रोहित को बारहवीं कक्षा में निवेदिता के विद्यालय में प्रवेश दिला दिया और कुछ समय के लिए डाक्टर गुप्ता विदेश यात्रा पर चले गए। चार अक्षर की मेहनत रंग लाई और रोहित जिले में सर्वाधिक अंक अर्जित कर जिला स्तर पर सम्मानित हुआ।

इस कीर्तिमान में निवेदिता का पूरा सहयोग रहा। उस दिन यदि निवेदिता अपने हाथ खर्च से बचाकर जमा किए पैसे गुल्लक से निकालकर नहीं देती तो रोहित परीक्षा शुल्क नहीं जमा करा पाता और परीक्षा से वंचित हो जाता। रोहित की सफलता के लिए निवेदिता छाया की तरह सहयोगी बनकर रही। डॉ. गुप्ता जब विदेश से लौटे तो रोहित की शानदार सफलता की जानकारी से बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके लिए सेवा संस्थाओं के सहयोग से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में डॉक्टरी की पढाई करने की व्यवस्था बना दी। रोहित प्रतिभाशाली तो था ही, विश्व विद्यालय से वह एक कुशल डॉक्टर बनकर विशेष प्रशिक्षण के लिए विदेश चला गया। वहाँ से वह केंसर रोग का विशेषज्ञ बनकर लौटा तो मुम्बई के एक बड़े अस्पताल में नौकरी प्रारम्भ कर दी। रोहित ने मुम्बई में रहकर अपना नाम कमाया। वह एक प्रसिद्ध केंसर रोग विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हो गया। उसकी ख्याती चारों और फैल गई। थोड़े ही समय में अपार धन सम्पदा अर्जित कर कोलकाता में केंसर हॉस्पिटल खोल दिया।

उस समय वह निवेदिता का स्मरण कर रोमांचित हो जाता था। यदि उस समय निवेदिता ने सहयोग नहीं दिया होता तो वहीं ठहर जाता। आगे बढकर मंजिल तक पहुंचने में निवेदिता की विशेष सहायता रही। निवेदिता को भुला पाना इतना सहज नहीं था। रोहित ने अपने हॉस्पिटल का नाम निवेदिता केंसर हास्पिटल रख दिया। इधर निवेदिता ने भी एम.बी.ए. की पढाई पूरी कर ली और उसकी शादी

कोलकाता के एक कुलीन परिवार में हो गई। किन्तु कुछ ही समय के बाद व्यापार में घाटा लगा तो निवेदिता का परिवार सड़क पर आ गया। घर का सब कुछ चला गया। गृहस्थी की गाड़ी धीमी रफ्तार से चलने लगी। थोड़े समय बाद अचानक ही मालूम हुआ कि निवेदिता भी केंसर रोग से पीड़ित है। कई डॉक्टरों से इलाज भी कराया गया किन्तु ज्यों ज्यों दवा की गई रोग बढ़ता ही गया। अंत में लोगों के कहने से उसे निवेदिता, केंसर हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया।

लगभग एक माह तक सहयोगी डॉक्टरों द्वारा इलाज चलता रहा। निवेदिता पूर्णतः स्वस्थ हो गई। इस उपचार का कुल एक लाख बीस हजार रुपयों का बिल जब निवेदिता के हाथों में थमाया गया तो उसके पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। कहाँ से लाए इतना पैसा? इस भारी भरकर राशि में कुछ छूट दिलाने के लिए प्रार्थना पत्र के साथ उसे बड़े डॉक्टर रोहित के पास पहुंचाया गया। डॉक्टर रोहित जब आश्वस्त हो गया कि वही निवेदिता है जिसने मेरा परीक्षा शुल्क जमा करा कर मेरी सहायता की थी वह स्तम्भित हो गया। उसने तत्काल बिल पर अंकित राशि के नीचे लिखा परीक्षा शुल्क की राशि को घटाने के बाद शेष राशि शून्य। रोहित, वही, तुम्हारा सहपाठी।

बिल को देखकर निवेदिता रोहित से मिलने को आतुर हो गई। हॉस्पिटल समय समाप्ति के बाद निवेदिता रोहित से मिली और उसकी अपनी सम्पूर्ण राम कहानी रोहित को बताई तो रोहित द्रवित हो गया और उसे अपने हॉस्पिटल का प्रबंध निदेशक बनाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

● आगूचा (राज.)

ढूंढो तो जानें

बच्चों, बताओ इस चित्र में कुल कितने वृत्त हैं?

● राजेश गुजर

● महेश्वर (म.प्र.)

विश्वासघाती की मौत

नवविजित पुरन्दर दुर्ग की सुरक्षा के लिए बीजापुर सुल्तान के निकटस्थ किले रुद्रमाल को जीतना आवश्यक समझ, उस पर छत्रपति की सेना ने हमला किया, लेकिन विजय का कोई चिन्ह नहीं दिखाई दिया।

''अच्छा तो अब, चालाकी से काम लेना चाहिए।'' शिवाजी ने निश्चय किया।

अगले दिन अफवाह उड़ायी गई कि शिवाजी की सेना घेरा उठा रही है और कोंकण के अभियान पर जा रही है।

महाराज को आशा थी कि किले का सूबेदार, जो मुगल था, आश्चर्यतत्व से पराजित हो जाएगा। लेकिन रात में जब किले पर हमला, किया गया तो किले से भरपूर जवाब मिला। शत्रु हमले का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार था।

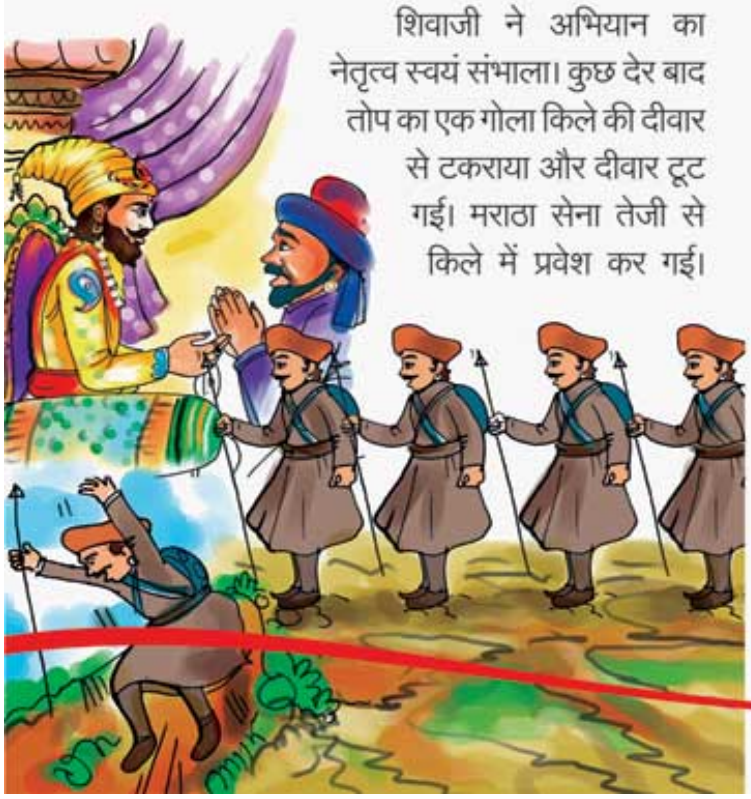

शिवाजी ने अभियान का नेतृत्व स्वयं संभाला। कुछ देर बाद तोप का एक गोला किले की दीवार से टकराया और दीवार टूट गई। मराठा सेना तेजी से किले में प्रवेश कर गई। संक्षिप्त से संघर्ष और रक्तपात के बाद किला हाथ आ गया।

सूबेदार को बन्दी बनाकर लाया गया । शिवाजी ने आज्ञा दी– ''उसे खोल दो। वह वीर पुरुष है।''

खान ने कृतज्ञता से सिर झुका दिया।

महाराज ने उसे अपने बगल में आदरपूर्वक बैठाया और कहा– ''तुम्हें सपरिवार सुरक्षित बीजापुर भेज दिया जाएगा।''

खान ने उत्तर दिया– ''महाराज! आपकी उदारता के लिए एहसानमंद रहूंगा। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे श्रेष्ठ नेता की सेना में भी विश्वासघाती है।'' उसका आश्चर्य उभर आया।

''विश्वासघाती ?''

''हाँ,'' खान ने बताया कि– ''उसकी सूचना पर ही तो आज इतनी तैयारी से सामना कर सका।''

''नाम?''

''नहीं, मैंने कुरान की कसम खाई है कि उसका नाम नहीं बताऊंगा।''

वातावरण में गम्भीर सन्नाटा छा गया।

शिवाजी विचारमग्न हो गए कि उनकी सेना में भी विश्वासघाती! आखिर वह कौन हो सकता है।

इस समय सरदार रामभाजी आगे आए– ''महाराज! यदि हममें से एक विश्वासघाती है, तो हम सब को घाटी में कूद जाना चाहिए।''

शिवाजी केवल एक व्यक्ति के लिए अपनी पूरी सेना नष्ट करने के लिए तैयार न थे। सरदार पास आया, चुपके से कान में कुछ कहा और २५० सैनिकों को लाइन में खड़ा कर दिया।

आगे खड़ा एक सैनिक कूद गया। दूसरा कूदने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा, खान चिल्लाया– ''बस! अब कूदने की जरूरत नहीं। विश्वासघाती मर चुका है।''

विश्वासघाती शर्म से बचने के लिए उतावली में पंक्ति के आगे ही खड़ा हो गया था।

(निरंतर अगले अंक में...)

छोटे से बड़ा

पहली पहली वर्षा में बच्चों ने पानी में तैराई कई छोटी बड़ी नावें खिलौने वाली आप जरा पता तो लगाइए इनमें कौन सी नाव है किससे बड़ी?

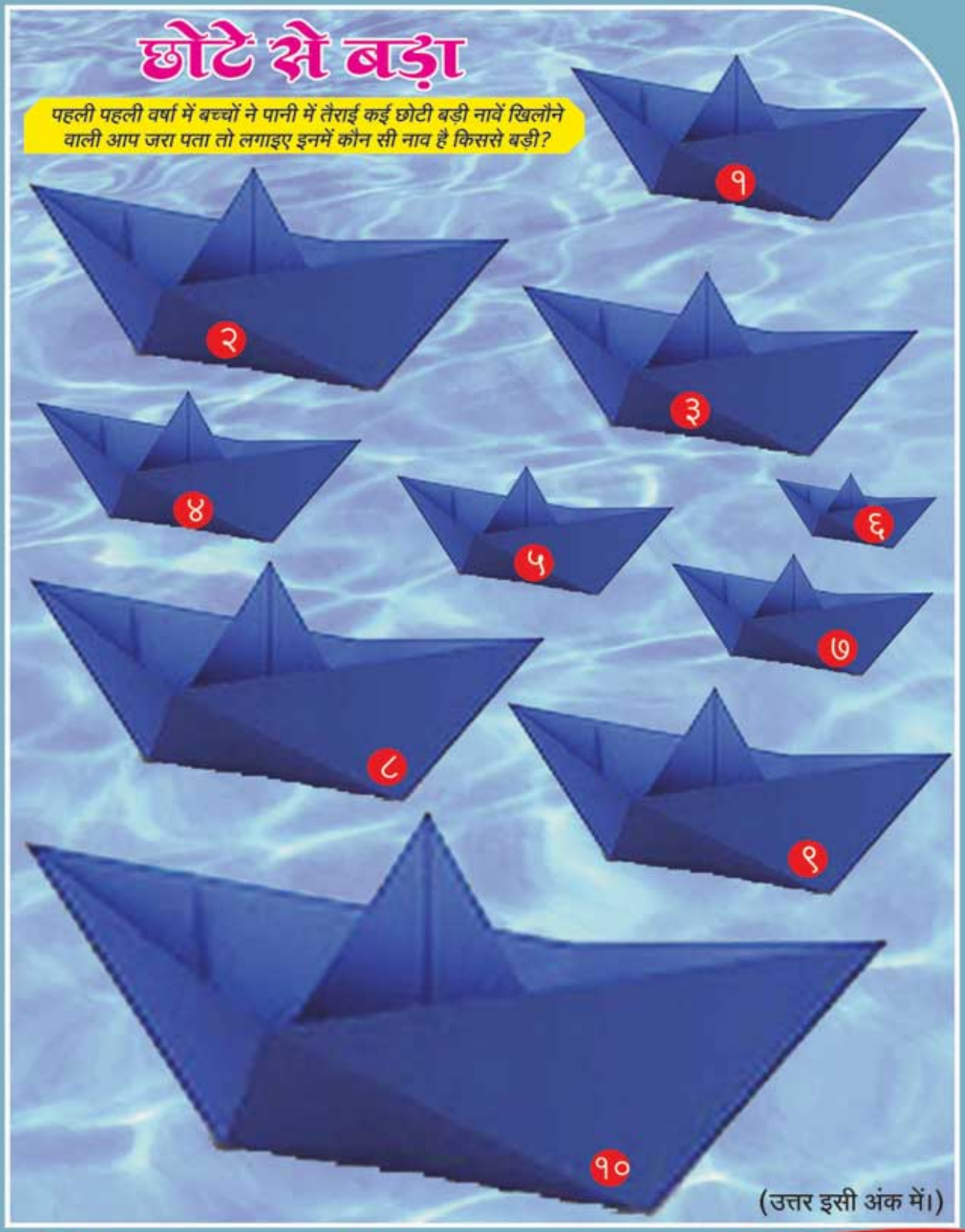

(उत्तर इसी अंक में।)

।। संस्मरण ।।

मीठी यादें

चलो शैवाल फिर से दिया जलाएं

शैवाल सत्यार्थी

मिठास से पहले– कुछ नमकीन, कुछ कसैला, कुछ कड़वा हो जाए तो, मिठास का जायका दुगना हो जाता है...तो पहले वही, पीड़ा में लिपटी मिठास।

अभी, पिछले दिनों यानी सितम्बर २०१६ में हृदयघात के कुछ पूर्व दिल्ली जाना हुआ– तो, मन हुआ कि एक बार अपनी, लगभग ६०–७० वर्ष पुराने पड़ोसी को देख लूँ। मैंने अपने आ. मित्रवत् श्री प्रभात जी झा को फोन लगाया और अपनी हार्दिक इच्छा से अवगत कराया। उनकी यह सदाशयता थी कि दिल्ली से बाहर (शायद जालन्धर में) होते हुए भी, तुरंत व्यवस्था करवा दी। २० सितम्बर को ४ बजकर १५ मिनिट पर अपने भतीजे नीरज के साथ ६–ए, कृष्णा मेनन मार्ग, अटल जी के निवास पर हम पहुँच गए। भारी सुरक्षा के मध्य, वह बंगला नं. ६ खामोशी की चादर ओढे हुए था।

अटल जी के सचिव श्री नारायण चन्द्र झिंगटा, जो अटल जी को लिखे मेरे न जाने कितने पत्रों के उत्तर दे चुके थे... हमें उस कक्ष तक लेकर पहुँचे, जहाँ पलंग पर भारतीय राजनीति का प्रखर सूर्य, माँ सरस्वती का प्रिय पुत्र विश्रामरत था। ऐसा गहन सन्नाटा वहाँ पसरा हुआ था कि सुई भी गिर जाए, तो चीख उठे... कभी जहाँ, अलबेले अटल के कहकहे गूँजते थे, जिसे सुनने के लिए देवता भी आकाश से उतरने का मन करते थे। मैं हाथ जोड़े उनके पैताने खड़ा था, अर्जुन बना हुआ सिरहाने दुर्योधन बनने का दुस्साहस न कर सका।

''सर, आँखें खोलिए, आपके पड़ोसी मित्र शैवाल आपसे मिलने ग्वालियर से आए हैं, जागिए– झिंगटा जी कह रहे थे... भीतर शायद कुछ हलचल सी हुई, कुछ कंपन सा हुआ, किन्तु आँख न खुली...शायद गहरी निद्रा में थे, और मुझे कुछ यूँ आभास हो रहा था कि अभी वे उठ बैठेंगे, अपनी चिर–परिचित शैली में अट्टहास करते हुए कहेंगे– 'ऐसा होना नहीं चाहिए, चलो शैवाल फिर से दिया जलाएँ।'

● **ग्वालियर (म.प्र.)**

।। संवाद ।।

कामरूप के संत साहित्यकार (१)

अग्रवाणी

देवेन्द्रचन्द्र दास 'सुदामा'

बच्चो! इस नवीन स्तम्भ के लेखक देश के जाने माने साहित्यकार हैं वे असमिया के अतिरिक्त हिन्दी एवं संस्कृत भाषा और सांस्कृतिक विषयों के तज्ञ हैं। वर्तमान में आप अ.भा. साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। इस स्तंभ में वे पूर्वोत्तर प्रांत के पांच प्रमुख संत साहित्यकारों का सरस संवाद शैली में परिचय कराएंगे।

– सम्पादक

अध्यापक डॉ. रामचन्द्र सिंह हिन्दी के बहुत बड़े विद्वान तथा साहित्यकार थे। आप असम प्रांत के एक विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक थे। उन्होंने वहाँ रहकर असमिया और बंगला भाषा भी अच्छी तरह सीखकर उन भाषाओं में पढ़ना–लिखना शुरू किया था। आप असमिया साहित्यकार के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गए हैं। सेवा निवृत्त होकर अब आप गाजियाबाद में रहने वाले अपने पुत्र के साथ ही रहने लगे हैं। उनका एक ही पुत्र और दो बेटियाँ हैं। दोनों बेटियों का विवाह हो गया। एक मुंबई में रहती है और एक गाजियाबाद में उनके पुत्र के घर के पास ही रहती है। उनका पुत्र दिल्ली के सचिवालय में सचिव है, और पुत्र वधू गाजियाबाद में ही एक कॉलेज की अध्यापिका है। छोटी लड़की जो उनके पास रहती है वह भी एक विद्यालय में अध्यापिका है और दामाद एक व्यापारी है। पुत्र के एक बेटा और एक कन्या है तथा बेटी का एक बेटा है। इतना होते हुए भी दोनों परिवारों में अंग्रेजी संस्कृति पैठ बहुत कम है, इसका एक ही कारण है कि अध्यापक डॉ. सिंह भारतीय संस्कृति के उपासक और प्रेमी हैं तथा अपने पुत्र–पुत्रियों को भी ऐसे सांचे में ढालने का प्रयास करते हैं। आज की परिस्थिति में आपको बहुत भाग्यवान ही कहा जा सकता है, क्योंकि उनकी बहू भी आधुनिक शिक्षा से शिक्षिता होते भी उनकी अनुयायी है। उनकी बहू अंग्रेजी की प्रोफेसर होते हुए भी घर में पूर्णतः भारतीय भाषा का वातावरण बरकरार रखने का प्रयास करती है। उनके परिवार में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी कम है। मम्मी–पापा–डैड आदि नहीं चलते हैं। घर में पूजा पाठ तो होते ही रहते हैं। पिता की परम्परा के अनुसार उनकी लड़कियाँ भी परम्परा निभाती हैं।

पुत्र–पुत्र वधू के विवाह के कई वर्षों बाद एक लड़का और लड़की जुड़वा होकर जन्म हुआ। दोनों अब आठवीं कक्षा में पढ़ते है। उधर छोटी बेटी का लड़का भी आठवीं कक्षा के ही विद्यार्थी है। पास में रहने के कारण तीनों एक परिवार के बच्चे की तरह हैं। विद्यालय जाते समय और आते समय भी एक साथ जाते आते हैं और शाम को एक साथ खेलते हैं। अध्यापक के पोते का नाम है शंकर और पोती का नाम है मनोरमा तथा नाती का नाम है माधव। अध्यापक सिंह जी अपने घर वापस आ जाने के पश्चात तीनों उनके साथ समय बिताते हैं। छुट्टी के दिन तीनों घर के सामने आम के वृक्ष के नीचे बैठ जाते हैं और दादा जी से कहानी सुनते हैं। दादाजी अपने भारतीय साहित्य के बहुत बड़े विद्वान है, उनमें से गिनीचुनी कहानियाँ अत्यंत रोचक ढंग से बच्चों को सुनाते आए हैं। जिससे बच्चों का मनोरंजन तो होता ही है साथ–साथ महत्वपूर्ण नीति शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। केवल इतना ही नहीं अपितु उनसे कहानियों के साथ अनेक ज्ञानगर्भ बातें सुनते–सुनते ये अत्यंत जिज्ञासु बन चुके हैं। छुट्टी के दिन कभी–कभी उनकी बेटी और बहू भी आकर बैठ जाती हैं और

अपने परमज्ञानी ससुर पिता से ज्ञान की बात सुनकर कृतार्थ हो जाती हैं। बहू उन्हें बाबूजी कहती हैं और बेटी बाबा कहती है।

असम में रंगोली या वैशाख बिहु बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है। चैत्र महीने के अंतिम तिथि से प्रारंभ होकर वैशाख महीने के सात दिन तक चलता है। इस उत्सव का प्रधान कार्यक्रम है नृत्य-गीत और अनेक प्रकार के कार्यक्रम। इनमें बिहु गीत और नृत्य प्रधान हैं। बिहु गीत और नृत्य भारत में प्रख्यात होते हुए भी देश के अनेक लोग इसके बारे में नहीं जानते हैं। बहाग बिहु के समय टी.वी. के राष्ट्रीय प्रसारण में बिहु नृत्य-गीत का प्रसारण होता है। एक बार शंकर और मनोरमा ने टी.वी. पर बिहु नृत्य देखा। उनको बहुत मजा आया। दूसरे दिन रविवार था। शाम को उनके घर के सामने बगीचे में आम के पेड़ के नीचे दादाजी के साथ बैठ गए, इतने में माधव भी आ गया। उस दिन प्रोफेसर की बहु सावित्री और बेटी लक्ष्मी भी आई। सब बैठ गए। इतने में शंकर ने पूछा- ''दादा जी! कल हमने टी.वी. में बिहुगीत और नृत्य देखा, बहुत मजा आया। वहाँ कहा गया है कि बिहुगीत और नृत्य असम की एक प्रमुख संस्कृति है। आप बहुत दिन असम में रहे हैं। असम के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। आप असमिया भाषा भी जानते हैं। हमने असम का नाम तो सुना है परन्तु असम के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। आपने ही कहा था कि हमारा राष्ट्र भारतवर्ष विशाल देश है, इसके बारे में सब कुछ जानना संभव तो नहीं है, किन्तु संक्षेप में थोड़ा बहुत जानना परम आवश्यक है। अपने राष्ट्र के बारे में संक्षिप्त परिचय के बिना राष्ट्र का पूर्ण नागरिक नहीं हो सकते हैं। आज आप असम के बारे में संक्षेप में बताइए!''

शंकर की बात सुनकर माधव ने भी कहा- ''शंकर भैया ने ठीक ही कहा है हम असम के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, हमें कुछ जानकारी दीजिए। हमने आपसे बहुत कुछ सुना और सीखा, लेकिन हमारे राष्ट्र के पूर्वोत्तर भारत के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। बताइए।''

शंकर और माधव की बात सुनकर अध्यापक सिंह का चेहरा चमकने लगा। उन्होंने मुस्कुरा कर सबकी ओर देखा। यह दृश्य देखकर बहु सावित्री को अपार प्रसन्नता हुई। उसने तुरंत कहा-''बाबूजी! आपने सारा जीवन असम में बिताया। आप उस प्रांत के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। वर्तमान में इस प्रांत को पूर्वोत्तर भारत कहते हैं। इसमें कई राज्य बन चुके हैं। आप हमें कुछ बताइए। आपने वहाँ से बहुत उत्तरीय (कंधे पर डालने का वस्त्र) और रंग-बिरंगी बड़ी-बड़ी टोपी लाए हैं और कांच के मंदिर जैसा सुन्दर बर्तन लाए हैं और हमारे शो केस में सजाकर रखे हैं, ये सब देखकर मुझे बहुत अच्छा लगता है।''

बीच में प्रोफसर ने कह दिया- ''हाँ-हाँ उस कपड़े को 'फूलामा गामोचा' कहते हैं। ये श्रद्धेयजनों को अत्यंत श्रद्धा सहित प्रदान किया जाता है। यह असम का सांस्कृतिक उपादान है और तुम जो रंग बिरंगी टोपी कहती हो इनको 'जापी' कहा जाता है। यह भी श्रद्धापूर्ण सांस्कृतिक उपादान है और कांस का जो पात्र कहती हो इसको ''शराई बंटा'' कहा जाता है। यह भी अत्यंत श्रद्धा का उपादान है। ठीक है मैं असम के बारे में बताऊँगा, किन्तु असम और पूर्वोत्तर भारत का इतिहास हमारे भारत के इतिहास की तरह प्राचीन है और विशाल तथा महत्वपूर्ण है।

विस्तृत रूप से वर्णन के लिए अनेक दिन लगेंगे तो भी मैं संक्षेप में कहने का प्रयास करूँगा। तुम लोग सुनो...''

मनोरमा ने कहा- ''दादाजी! लेकिन यह भी बताना कि उस प्रांत का नाम पहले क्या था और आज क्या है? आपने ही कहा था कि हमारे भारत का नाम पहले जम्बूद्वीप था। बाद में भारत हुआ, मुसलमानों ने इसका नाम रखा हिन्दुस्तान और अंग्रेजों ने नाम दिया इण्डिया, ठीक उसी प्रकार पूर्वोत्तर क्षेत्र में नाम के बारे में भी कुछ इतिहास है क्या?''

दादाजी - अरे बेटी मनोरमा! तुम बड़ी चालाक हो। सुनती रहो, मैं बताऊँगा। देखो आज सूर्यदेव धीरे-धीरे अस्ताचल की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। धीरे-धीरे अंधेरा होता जा रहा है। अब संध्या होने लगी है। प्रार्थना का समय हो गया। अगले रविवार से पूर्वोत्तर भारत और असम के बारे में बताना शुरू करूँगा। शंकर माधव! क्या यह ठीक होगा न?

शंकर माधव - ठीक है। लेकिन हमको बताना ही होगा।

मनोरमा- क्यों नहीं बताएंगे जरूर बताएंगे है न दादाजी?

दादाजी - जरूर-जरूर। आज के लिए राम-राम।

सब - राम, राम...

● **ब्रह्मसत्र तेतेलिया, गुवाहाटी (असम)**

(निरंतर आगामी अंक में)

उसे समझ आई

कहानी : रमाशंकर

''अरे! कितनी देर से तू प्लेट धो रहा है, अभी तक धो नहीं पाया। ला जल्दी से धोकर दे, नहीं तो दूंगा एक हाथ।'' होटल का मालिक गंगाराम प्लेट धो रहे लड़के के ऊपर गुस्से से बरसता हुआ बोला। लड़का गंगाराम की फटकार सुनकर जल्दी जल्दी प्लेटें धोकर उन्हें एक के ऊपर एक रखकर गंगाराम को देने के लिए उसकी ओर अभी चार पांच कदम ही चला था कि अचानक सामने से आ रहे एक आदमी से टकरा गया। उसके हाथों में पकड़ी प्लेटें छूट कर फर्श पर आवाज करती हुई इधर–उधर जा गिरी।

लड़का यह देखकर सन्न रह गया। उसी समय एक जोरदार तमाचा ''चटाक'' की आवाज करता हुआ उसके गाल पर पड़ा। उसका पूरा बदन थर–थर कांपने लगा। गंगाराम बोला– ''नालायक, देखकर नहीं चलता। सारी की सारी प्लेटें तोड़ दी। अंधा कहीं का, तू मेरा रोज कोई न कोई नुकसान कर देता है। समझ ले, सारा नुकसान तेरे वेतन से काट लूंगा, हाँ।''

मालिक की मार व डांट खाकर लड़का टूटी प्लेटों को जल्दी जल्दी बटोरने लगा। उसी दुकान पर मिठाइयां लेने आया कमल यह दृश्य देखकर स्तब्ध खड़ा था। उसका घर होटल के पास ही था। घर के मेहमानों के लिए वह मिठाईयां लेने होटल पर आया था। लड़के के ऊपर होटल मालिक का यह अत्याचार देखकर वह बहुत दुखी हुआ।

मिठाई लेकर वह घर आया । मां को मिठाई देने के बाद वह दोस्तों के साथ खेलने बगीचे में चला गया।

उसके सभी दोस्त बगीचे में क्रिकेट खेल रहे थे। वह भी उनके साथ खेलने लगा। किन्तु आज उसका मन खेलने में ठीक से न लगा। वह बगीचे में एक ओर बैठकर चुपचाप उस होटल वाले लड़के के विषय में सोचने लगा। उसका जी चाह रहा था कि वह भी जाकर उस होटल वाले की पिटाई कर दे। अचानक उसकी नजर कलाई पर बंधी घड़ी पर पड़ी। घड़ी में शाम के छः बज चुके थे। उसे पढने जाना था। वह बगीचे से घर की ओर तेजी से चल पड़ा।

रात के आठ बज चुके थे। ठंड जोर की पड़ रही थी। कमल दोस्त के घर से पढकर पैदल घर की ओर आ रहा था। एकाएक उसकी

नजर गंगा होटल की ओर गई। उसने देखा, बंद होटल के बाहर फर्श पर वही लड़का केवल एक पतली मैली चादर ओढे थर-थर कांपता हुआ सो रहा है। यह देखकर वह तुरंत उसके पास गया। उसने जो गर्म शाल ओढ़ रखी थी, उतार कर उस लड़के के ऊपर डाल दी। अचानक चादर ओढ़ाते ही लड़का झट से डर कर उठकर बैठ गया। उसे घबराया हुआ देखकर कमल बोला-'' डरो मत, मुझे अपना दोस्त ही समझो । मेरा नाम कमल है। मैं यहां पास में ही रहता हूँ। तुम्हारा क्या नाम है?''

लड़का बोला- ''गौरव, लेकिन यहाँ मुझे कोई छोटू कहता है तो कोई छोकरा।''

उसकी बात सुनकर कमल बोला- ''कोई बात नहीं मैं तुम्हें गौरव कहकर ही बुलाऊंगा। कितना अच्छा नाम है तुम्हारा... गौरव। तुम कहाँ से आए हो?''

गौरव मंद स्वर में आँखें झुकाए हुए बोला- ''लखनऊ से।''

''अरे! वाह, वहां तो मेरे मामा जी रहते हैं। तुम यहाँ दिल्ली कैसे पहुँचे?'' कमल ने पूछा।

वह चुप रहा। उसकी चुप्पी देखकर कमल ने कहा- ''देखो गौरव, इस शहर में तुम्हें अभी बहुत कठिनाई उठानी पड़ेगी। यहाँ तुम्हें सुख-दुःख बांटने वाला कोई नहीं मिलेगा। इसलिए मुझे अपना मित्र समझकर सब कुछ बता दो, हो सकता है मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूं।''

गौरव ने थोड़ी हिम्मत की। वह बोला- ''मित्र, मैं अपने घर से भाग कर आया हूं।''

''लेकिन क्यों?'' कमल ने उससे प्रश्न किया।

गौरव ने उसे बताया- ''मोहल्ले व विद्यालय के कुछ गंदे लड़कों की संगत में पड़कर मैंने लाटरी खेलनी शुरू कर दी थी। एक दिन पहली तारीख को मिली पिताजी के वेतन के पैसे चुराकर मैंने लाटरी खरीद ली। पिताजी को इसका पता चल गया। उन्होंने मुझे खूब डांटा। मैं उनकी डांट खाकर घर से बिना बताएं यहां भाग आया। जेब में कुछ पैसे थे। जब वे खर्च हो गए तो मैं बहुत परेशान हुआ। भूख भी सताने लगी थी। मैं इधर-उधर भूख मिटाने के लिए भटक रहा था। अचानक इस होटल के मालिक से मेरी मुलाकात हो गई। इसने मुझे अपने पास काम पर रख लिया। मुझे यहाँ पन्द्रह दिन होने को आए हैं। इसकी डांट व फटकार से मैं तंग आ गया हूँ।''

गौरव की पूरी बात सुनने के बाद कमल ने उसे शीघ्र इस समस्या से छुटकारा दिलाने का आश्वासन दिया।

एक सप्ताह बीत गया था। कमल उस दिन के बाद गौरव से मिलने नहीं आया था। गौरव को बड़ी चिन्ता हो रही थी। वह हर रोज उसकी राह देखता था। खासकर शाम को।

आज रात उसे अपने घर की, माँ-पिताजी की बहुत याद आ रही थी। वह उनके पास जाने के लिए बेचैन हो रहा था। घर से भागकर आने पर वह बहुत पछता रहा था। उसकी इच्छा घर जाकर माँ-पिताजी से माफी मांगने की हो रही थी। पूरी रात उसने रो-रोकर काट दी।

दूसरे दिन सुबह जब वह सोकर उठा तो उसका पूरा बदन बहुत जल रहा था। काम करने की उसकी इच्छा नहीं थी। किन्तु होटल मालिक के डर के कारण किसी तरह वह काम कर रहा था।

होटल मालिक के आदेश पर गौरव जल्दी-जल्दी प्लेटें धोने लगा। होटल मालिक ने काम में देर होते देखा तो वह गुस्से से उसे पीटने लगा। गौरव रोने, चीखने लगा। होटल के अन्दर बैठे सभी ग्राहक तमाशा देख रहे थे। होटल का मालिक गौरव को बड़ी बेरहमी से पीट रहा था। तभी अचानक एक आवाज होटल में गूँजी- ''पकड़ लो इस आदमी को और लगा दो इसके हाथों में हथकड़ी।'' यह आवाज इंस्पेक्टर धरम की थी। वह अपने सिपाहियों के साथ होटल के बाहर कमल के साथ खड़े थे।

इंस्पेक्टर का आदेश पाते ही सिपाहियों ने होटल मालिक के हाथों में तुरंत हथकड़ी पहना दी। होटल के

मालिक की समझ में कुछ नहीं आया। वह बोला–''इंस्पेक्टर साहब मेरा गुनाह क्या है? आप...आप ने मुझे क्यों हथकड़ी पहनाई है?''

इंस्पेक्टर धरम उसका गिरेबान पकड़ कर बोला–''तूने बाल शोषण किया है।''

''बाल शोषण?'' होटल मालिक आश्चर्च में पड़कर बोला।

इंस्पेक्टर धरम ने कहा–''हाँ, बाल शोषण, तूने इस मासूम बच्चे से होटल का काम करवाकर ये अपराध किया है। तुम्हें पता नहीं, बाल शोषण करना अपराध है। तुम्हें इसकी सजा अब भुगतनी पड़ेगी।'' होटल मालिक ने इंस्पेक्टर के सामने माफ करने के लिए बहुत हाथ जोड़े, गिड़गिड़ाया। पर इंस्पेक्टर धरम ने उसकी एक नहीं सुनी। सिपाहियों ने उसे अपने साथ लाई गाड़ी में बैठा दिया।

होटल मालिक गंगाराम को पकड़वाने में कमल का बड़ा योगदान था। इंस्पेक्टर धरम ने कमल को इस कार्य के लिए शाबासी दी। होटल मालिक को लेकर पुलिस वहाँ से पुलिस स्टेशन चली गई। पुलिस के जाते ही कमल गौरव को अपने साथ लेकर घर आया। उसने उसे अपनी माँ से मिलवाया और स्वादिष्ट व्यंजन खिलवाए।

रात में उसने गौरव को बताया कि उसके पिताजी श्रम मंत्रालय में काम करते हैं। उन्होंने ही पुलिस को भिजवाकर उसे होटल मालिक के चंगुल से निकलवाया है।

दूसरे दिन सुबह ही कमल अपने माँ–पिता के साथ गौरव को साथ लेकर लखनऊ जाने वाली ट्रेन पकड़ने को निकल पड़ा। उसे अपने मामा के लड़के के जन्मदिन पर पहुँचना था और गौरव को उसके माँ–पिता के पास पहुँचाना था।

• लखनऊ (उ.प्र.)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

जब जब पानी आता है

कविता : गार्गी जमड़ा

जब–जब पानी आता है,
पत्ते, फूल खिलाता है।
बरखा रानी आती है,
रिमझिम पानी लाती है।।

पानी आता झर–झर–झर,
बादल गरजते गर–गर–गर।
बिजली रानी चमकती है,
लगता अच्छा नभ मंडल।।

कभी आता ज्यादा पानी,
कभी आता पानी कम।
कभी कहीं पर बाढ़ बोलती,
कभी बोलता सूखापन।।

• जावरा (म.प्र.)

घास की फांस

कहानी : पूनम पाण्डे

एक था बड़ा सा आंगन। उसके एक हिस्से में हरी-भरी दूब धीरे-धीरे फैल रही थी। दूब का दर्शन करके सबकी आंखों में ठण्डक आ जाती, माली भी दूब को फैलती हुई देख खुश होता था। स्त्रियाँ दूब के तिनके तोड़कर माथे पर लगाती और मंदिर में देवता को अर्पण करने को ले जाती।

दूब का स्वभाव भी बड़ा नरम था। न जाने कितनी चींटियां उस पर चढती-उतरती, गौरेया अपने नन्हें पैर उस पर टिका देती। कभी आम के पेड़ से उतर कर गिलहरी दूब पर फुदकती। पर दूब को तनिक क्रोध नहीं आता था।

आंगन में खेलती माली की बिटिया दूब को अंगुलियों से सहलाती। दाएं फिर बाएं लहराती, और भाग जाती। उसकी अंगुलियों का कोमल स्पर्श उसे गुदगुदा देता। दूब खिलखिलाती हुई एक आधा इंच बड़ी हो जाती थी। ये बातें दूब की पड़ोसी घास को फूटी आंख नहीं सुहाती थीं। वो सोचती भला दूब को सब प्यार क्यों करते हैं। वो भी दूब के साथ उग रही है कोई उसे माथे से नहीं लगाता, उसके सीने पर सांप लोटते रहते। जलन से भरकर घास ने मन ही मन कुछ तय किया।

अगली सुबह माली ने आंगन को सींचना शुरु किया। पर ये क्या? सुरसा जैसा मुख फैलाकर घास ने सारा पानी पी लिया। दूब का हलक सूखने लगा। वो एक बूंद के लिए भी तड़पने लगी, पर घास का दिल नहीं पसीजा। उसने दूब को नष्ट करने की ठान ली थी। दूसरे दिन भी यही हुआ। घास को अपने मंसूबे पूरे होते हुए दिखाई देने लगे। दूब पीली पड़ गयी तीन दिन में ही वो सूख कर कांटा हो गई।

दूब की दुर्दशा देख घास के दिल में लड्डू फूटने लगे।

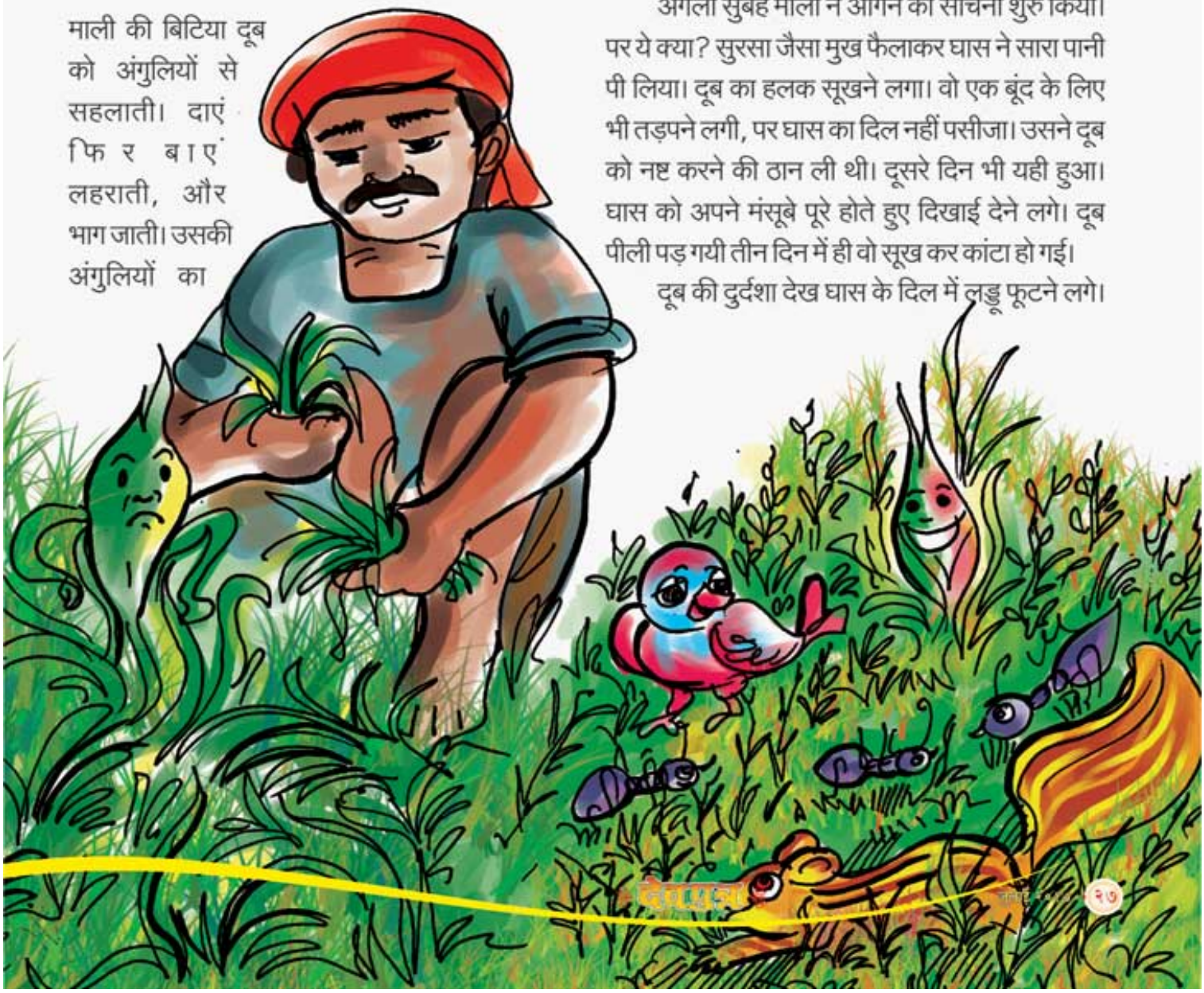

उसकी खुशी का ठिकाना ना था। घास धूर्तता से लहराने लगी। उसे दिन में सपने दिखाई दे रहे थे। कोई उसे माथे से लगा रहा था कोई मंदिर में...। घास ने अचानक माली की पदचाप सुनी। माली पास ही खड़ा था। कुछ क्षण दूब को एकटक देखने के बाद माली ने उसे सावधानी से जड़ सहित उखाड़ लिया।

खाद, मिट्टी–पानी के गमले में दूब को कुछ सांस आई। सुबह–दोपहर–शाम तीनो ही समय माली ने दूब की पूरी देखभाल की। उसका चेहरा खिल उठा। दूब हरी होने लगी थी।

घास ये सब जलते–भुनते देख रही थी। दूब की चिंता में माली आंगन सींचना भूल गया। घास चारों खाने चित्त हो गई। ईर्ष्या और तनाव ने उसे सूखा दिया। आंगन में चलते हुए माली ने सुखी घास को देखा। क्षण–भर में माली ने जड़ सहित उखाड़कर घास को गाय के चारे में डाल दिया।

● कोटड़ा (राज.)

१०० की खोज में निन्यानवे का फेर

लक्ष्मीनारायण भाला

४X४ के इस चौकोन में १७ से ३३ तक (२९ छोड़कर) १७ संख्याओं का चमत्कारिक मेल सौ की खोज में निन्यानवे का फेर

२५	२०	२३	३१	→
३२	२२	१७	२८	→
१८	२७	३३	२१	→
२४	३०	२६	१९	→
↓	↓	↓	↓	↘

१० आड़े, खड़े
और तिरछे में ११

१०– आड़े खड़े और तिरछे जोड़
७– २ X २ के चौकानों का जोड़
४ – ३ X ३ के चारों कोनों का जोड़
१ – ४ X ४ के चारों कोनों का जोड़
६ – २ X २ के तीन चौकानों के ऊपर–नीचे, दहिने–बाएं और किनारे की संख्या का जोड़ ११

२८

१०० के लिए ३ आधी प्रदक्षिणा (फेरा)

(१) २०+३२+१८+३०
(२) ३१+१७+३३+१९ = १००
(३) २०+१७+३३+३०

हमारे राज्य पुष्प

जम्मू कश्मीर का राज्य पुष्प

सामान्य बुरान्स

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

कमल बदल कर नये फूल को,
लोगों ने अपनाया।
राजकीय पद देकर इसको,
इसका मान बढ़ाया।।
फूल निराला पर्वत वाला,
सुन्दर इसकी काया।
अपनी सुन्दरता के कारण,
सबके मन को भाया।।
घने और ऊँचे पौधों पर,
यह गुच्छों में खिलता।
नीली, लाल, गुलाबी, आभा,
वाला प्रायः मिलता
धारी और चित्तियाँ मिलकर,
इसका रूप सजातीं।
भौरों वाली कई टोलियाँ,
खिंच कर दौड़ी आतीं।
इसकी सुन्दरता के सम्मुख,
सारे फूल लजाते।
इसीलिए कश्मीरी इससे,
ड्राइंग रूम सजाते।।

• भोपाल (म.प्र.)

पौधा तुलसी का

कहानी : पद्मा चौगांवकर

पन्द्रह दिन, विद्यालय खुले हो गए थे। पर अभी सब बच्चों के पास पुस्तकें नहीं आ पाई थीं, इसलिए विषयों के पाठ पढ़ाना मुश्किल था, जल्दी ही पुस्तकें आने की आशा थी, प्रधान शिक्षिका अनामिका और दूसरी शिक्षिकाएं बच्चों को सहज जीवन और अनुशासन के महत्व के पाठ पढ़ाने लगी। उन्होंने गणित और विज्ञान विषयों की बेसिक बातें, दुहराने का काम कक्षाओं में शुरू किया।

स्वयं कैसे स्वच्छ रहें, घर बाहर और विद्यालय को कैसे स्वच्छ रखें, बच्चे इन दिनों सीख रहे थे।

पर्यावरण प्रदूषण क्या हैं? बच्चे पर्यावरण संरक्षण में, किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं, पर्यावरण स्वच्छ रखने में पेड़–पौधे किस प्रकार सहायक है, सारी बातें, सामान्य ज्ञान के रूप में बच्चे सहज ही जान रहे थे।

अनामिका ने बड़ी कक्षा के बच्चों को कई प्रकार के पेड़–पौधों की पहचान कराई, ये हमारे जीवन में किस प्रकार

उपयोगी हैं।

उन्होंने बताया तुलसी का पौधा तो हर घर में होता है इसे प्रवेश द्वार पर लगाने से घर का वातावरण शुद्ध होता है, उससे मिलने वाले लाभ भी उन्होंने बच्चों को बताएं।

स्वतंत्रता दिवस आने वाला था। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चे और शिक्षक, इस दिवस पर होने वाले आयोजनों की तैयारी में लग गए। पूरा सप्ताह भर कई कार्यक्रम जो थे। सफाई स्वच्छता, योग-व्यायाम, खेल-सांस्कृतिक प्रदर्शन सभी प्रकार की प्रतियोगिताएं होनी थी।

कक्षा छः के लिए, उनकी कक्षाअध्यापिका ने एक अनोखी प्रतियोगिता का आयोजन किया। कक्षा के सभी विद्यार्थी, किसी पात्र में मिट्टी भर कर, एक पौधा रोपकर लाएंगे। एक सप्ताह का समय था, और बच्चों में खासा उत्साह था। पौधे के साथ उस पौधे का नाम और उपयोगिता भी लिखनी थी।

बच्चों के घरों में भी जैसे हलचल मच गई। बड़ों को भी तो बच्चों के कामों में सहयोग करना था और बच्चों की तरह विनय प्रतियोगिता में भाग ले रहा था। उसे चिंता थी- एक गमले की- एक अनोखे पौधे की !!

विनय के पिताजी ने आश्वासन दिया कि वे जल्दी ही एक अच्छे पौधे और गमले की व्यवस्था कर देंगे। विनय खुश था, पर दो-तीन दिन तो पिताजी की व्यस्तता में यूं ही बीत गए।

रोज रात बैंक से लौटने में उन्हें देर हो जाती। विनय उनकी प्रतीक्षा करते-करते सो जाता।

वह चाहता था कोई विशिष्ट पौधा छोटे से गमले में रोपकर ले जाए। माँ से पूछकर चार पंक्तियां उसके बारे में लिखें...।

पर पिताजी की व्यस्तता उसे निराश कर रही थी।

आखरी दिन तो हद हो गई-''सुबह उठते ही उसे खबर मिली की पिताजी तो दौरे पर चले गए हैं।''

हताशा ने तो उसे रुला ही दिया। माँ ने समझाया-''बीनू, इन दिनो पिताजी बहुत ही व्यस्त हैं, तुम्हारे लिए समय नहीं दे पाए, मैं कुछ करती हूँ।''

तभी महरी 'माई' आयी- पूछा- ''बीनू क्यों रो रहा है?''

कारण जानकर बोली- ''अभी आई'' और घर से लौट गई।

बीनू की माँ सोचने लगी- घर पर हरियाली के नाम पर एक पौधा भी नहीं है, जो उठाकर इसे दे देती। सचमुच हमने वनस्पति के महत्व को कभी समझा ही नहीं। कम से कम एक-एक पौधारोपण करवाकर शिक्षिका, बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता का पाठ तो दे रही हैं।

''.... पर मैं क्या करूँ? घर में बालिश्त भर का गमला नहीं। गोबर मिट्टी भी नहीं।

''आज, अभी उसे पौधा लेकर जाना है।''

दरवाजे पर आहट हुई- माई आ गई थी, उसके हाथ में मिट्टी का छोटा सा तुलसी घरा था। पीली मिट्टी से पुता, चून की रंगोली से सजा, छोटा सा गमला था। उसमें तुलसी का नन्हा सा पौधा लगा था। '' ये तुम ले जाओ मैं फिर बना लूंगी।''

''वाह!'' बीनू, तुलसी का पौधा और इतना सुंदर गमला!! रमा दीदी ने हमें तुलसी के पौधे का महत्व भी बताया था।'' वह झट से एक कागज लाया। उसके टुकड़े पर उसने कविता की चार पंक्तियाँ लिख दी- और अपना नाम भी!

''पवित्र पौधा तुलसी का,
सौ सौ गुण इसमें भरे।
रोगों पर करता उपचार
वायु प्रदूषण दूर करे।''

● गंजबासौदा (म.प्र.)

पं. प्रतापनारायण मिश्र स्मृति- युवा साहित्यकार सम्मान हेतु साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

विधाएँ

(१) काव्य (२) कथा-साहित्य (३) बाल साहित्य (४) पत्रकारिता
(५) संस्कृत (६) नाटक (रंगमंच) (७) अन्य भाषा (हिन्दी से इतर)

प्रत्येक विधा में से एक साहित्यकार का चयन किया जाएगा। सभी चयनित युवा साहित्यकारों को सम्मान में प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र एवं रुपए १०,०००/- की नकद राशि न्यास द्वारा भेंट की जाएगी।

२३वें सम्मान समारोह हेतु प्रविष्टि शामिल करने के लिए १ अगस्त २०१७ को ४० वर्ष तक की आयु (जन्मतिथि प्रमाण पत्र संलग्न करें) के साहित्यकार अपने छाया चित्र (फोटो), आत्म-कथ्य (बायोडाटा), अपनी सम्पूर्ण कृतियों का समीक्षात्मक परिचय तथा प्रकाशित नमूने की किसी पुस्तक के साथ ३१ जुलाई २०१७ तक निम्न पते पर भेज सकते हैं-

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-९१, निराला नगर, लखनऊ २२६०२० (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

कबूतर आया चिट्ठी लाया

कविता : सारांश गुप्ता

कबूतर आया कबूतर आया
साथ में अपने चिट्ठी लाया
काला सफेद चितकबरा कबूतर
सिर अपना मटकाता कबूतर
आँख गुलाबी चोंच नुकीली
गुटर-गूँ करने वाला कबूतर
कबूतर ने हमको खूब हँसाया
साथ में अपने चिट्ठी लाया
शांति का संदेश है देता
सबको अपना मित्र बनाता
बैठ कर छत पर गुट-गुट करता
पंख अपने फड़ फड़ करता
कबूतर देख मन है हर्षाया
साथ में अपने चिट्ठी लाया।

• मुम्बई (महा.)

निडरता का राज

चित्रकथा - देवांशु वत्स

।। विज्ञान आलेख ।।

चमके बिजुरिया

आलेख : डॉ. विभा सिंह

बिजली क्या है? तूफानी बादलों में विद्युत आवेश पैदा होता है। इनकी निचली सतह ऋणावेशित (नेगेटिव) और ऊपरी सतह धनावेशित (पाजीटिव) होती है, जिससे जमीन पर धनावेश पैदा होता है। बादलों और जमीन के बीच लाखों वोल्ट का विद्युत प्रभाव होता है। धन और ऋण एक दूसरे को चुंबक की तरह अपनी-अपनी ओर आकर्षित करते हैं, किन्तु वायु अच्छी संवाहक नहीं होती। अतः विद्युत आवेश में रुकावटें पड़ती हैं और बादल की ऋणावेशित निचली सतह को छूने की कोशिश करती धनावेशित तरंगें (जो बादल के पीछे छाया की तरह लगी रहती है।) पेड़ों, पहाड़ियों, इमारतों, शिखरों, बुर्ज, मीनारों और राह चलते लोगों पर टूट पड़ती है।

इस बीच विषम ऋणावेशित संस्पर्शक (फीलर) लगातार जमीन की ओर प्रवाहित होते रहते हैं। अंत में वायु की रोधकता पराजित हो जाती है और विद्युत धारा स्थापित हो जाती है। इस सुचालक वायु सरणि के रहते बिजली की भीषण हिलोर धरती से आकाश की ओर फूट पड़ती है। जिससे कौंध पैदा होती है, (यद्यपि हमें लगता है कि बिजली आकाश से धरती की ओर दौड़ रही है।) प्रत्येक कौंध जमीन से सैकड़ों मीटर दूर हो सकती है और सैकड़ों किलोमीटर दूर भी।

बिजली कितनी गर्म है?

आकाश में चमकने वाली बिजली को तड़ित कहते हैं। साधारणतया इसमें १७,००० से २७,००० डिग्री सेंटीग्रेड ताप होता है सूर्य की सतह से तीन से पांच गुना ज्यादा। वैज्ञानिक ठंडी बिजली का जिक्र करते हैं, मगर इससे अभिप्राय है, कम समय लगभग सेकेंड के हजारवें भाग, तक चमकने वाली बिजली। गरम बिजली कहीं अधिक देर अर्थात सेकेण्ड के दसवें भाग तक चमकती है। गरम बिजली आग लगाती है, ठंडी बिजली प्रायः विस्फोटक गर्जना करती है।

बिजली की तीव्र ऊष्मा कौंध के मार्ग में वायु को प्रचंड वेग से बींधती है। वायु इतनी त्वरा से उसका मार्ग प्रशस्त करती है कि उसके हटने या बिंधने की आवाज सुनी जा सकती है। तड़ित दीपन निकट हो तो कर्णभेदी कड़कड़ाहट दूर हो तो एक तरह की गड़गड़ाहट। तड़ित गर्जन प्रायः ११ किलोमीटर दूर तक और कभी-कभी इससे तीन चार गुना दूर तक सुना जा सकता है।

प्रकाश की गति ३,००,००० किलोमीटर प्रति

सेकेण्ड है, यानी बिजली की चमक आप तत्काल देख सकते हैं। ध्वनि लगभग तीन सेकेण्ड में एक किलोमीटर चलती है। चमक देखने के बाद सेकेण्ड गिनने लगिए। गरज सुनने पर गिनती बंद कर दीजिए। सेकेण्डों को तीन से भाग देकर आप पता लगा सकते है कि बिजली कितनी दूर चमकी।

बिजली कितनी तरह की?

आम टेढ़ी मेढ़ी दिखने वाली बिजली विद्युत रेखा कहलाती है, तो एक जैसी अनेक समानांतर धारियां दिखती हैं, जिन्हें विद्युतपट कहते हैं। अगर इसकी दो शाखाएं एक साथ जमीन को छूती दिखे तो इसे विद्युतलता या द्विशाखित विद्युत कहेंगे।

बहुत दूर चमकने वाली बिजली, जिस की धारियां आप नहीं गिन सकते और न जिसका गरजना सुन सकते हैं, विद्युतोष्मा कहलाती है।

बादलों के धनावेशित और ऋणावेशित छोरों के बीच विस्तृत क्षेत्र में कौंधने वाली बिजली को विद्युतास्तरण कहते हैं।

बिजली की जो दीप्तियां धरती को नहीं छूतीं, उन्हें अंतर्मेघ विद्युत कहते हैं, यानी किसी बादल के भीतर या दो बादलों के बीच की बिजली। बादल आम तौर पर इनके प्रकाश को ढांपे रहते हैं, अतः आकाश में चहुं ओर दमकने वाली बिजली की अधिकांश कौंध का हमें पता भी नहीं चलता। कभी–कभी इस तरह की कोई दीप्ति तूफान से कई किलोमीटर दूर निकल जाने के बाद जमीन को छूती है। इसे कहते है बिन ''मेघ वज्रपात'' या ''दैवी विपत्ति''।

बिजली कब गिरती है?

इधर आप यह लेख पढ रहे हैं, उधर विश्व में लगभग १,८०० विद्युतीय उत्पाद पनप रहे हैं। इनसे प्रति सेकेण्ड लगभग ६०० कौंधें पैदा हो रही हैं, जिनमें से १०० धरती को भी छू रही हैं, यानी प्रतिदिन लगभग ८५ लाख बिजलियां धरती पर टूटती हैं। पीटर

वाइमीस्टर की 'द लाइटनिंग बुक' के अनुसार अधिकांश वैज्ञानिक आज इस बात से सहमत हैं कि वायुमंडल जिन अनगिनत इलेक्ट्रानों को हम रोजाना उठने वाले ये हजारों तूफान अनगिनत इलेक्ट्रान वापस धरती पर भेजकर देते हैं। दूसरे शब्दों में बिजलियों के टूटने से धरती का विद्युतीय संतुलन बना रहता है।

जमीन पर सूर्योदय की अपेक्षा सूर्यास्त के समय अधिक बिजली गिरती है, सागर में इसका उलटा होता है। इसी प्रकार गर्मियों में सर्दियों की अपेक्षा अधिक बिजली गिरती है।

बिजली किस पर गिरती है?

बिजली की चपेट में आने वाले दो तिहाई से अधिक व्यक्तियों पर बिजली तब गिरती है, जब वे घर से बाहर खुले में होते हैं, इसके तीन में से दो शिकार बच जाते है। मरने वालों में से ८५ प्रतिशत पुरुष और उनमें से भी अधिकांश १० से ३५ वर्ष की आयु के लोग होते हैं। इन में से भी उन लोगों को मौत ज्यादा दबोचती है, जो पेड़ों के नीचे शरण लेते हैं (प्रायः हर वर्ष १० से १६ प्रतिशत) और इनमें से भी अधिकांश मरने वाले होते हैं, गोल्फ के खिलाड़ी। घायल होने या मरने वाले अन्य लोग वे हैं, जो बिजली गिरने पर तैरते, नाव खेते ट्रैक्टर चला रहे होते हैं। यह आंकड़े अमरीका के हैं। औसत आदमी के बिजली से मरने की कितनी संभावनाएँ हैं? दस लाख में से एक पर स्थिति बदतर भी हो सकती है।

बिजली के आघात सहने का चैंपियन संभवतः राय सुलीवन है। सेवानिवृत्त अमरीकी वनपाल सुलीवन पर सात बार बिजली गिर चुकी है। इसके अनेक प्रहारों से उसकी भौंहें झुलस गई बाल जल गए, कंधे दब गए, पांव से जूता निकल गया और कार से बाहर उछाल दिया गया। वह कहता है, बिजली को मुझे ढूंढ निकालना आ गया है।

सुरक्षा के उपाय

- ऊंचे पेड़ के नीचे खड़े न हों।
- आस पास की सबसे ऊंची चीज न बनें। नाव या मैदान में, या पहाड़ी की चोटी पर खड़े हों, तो दुबक जाएं पानी से बाहर निकल आएं।
- धातु की वस्तुएं जैसे गोल्फ का बल्ला, मछली पकड़ने की छड़ व बंदूक आदि दूर झटक दें। जूतों में नाल या कील लगे हों, तो उतार दें। बाइसिकल से उतर जाएं।
- सिर के बाल खड़े होने लगे या उसकी त्वचा सिहरने लगे, तो समझें बिजली गिरने ही वाली है। जमीन पर बैठकर सिर आगे झुका लें और घुटने बांहों में भी भींच लें, लेकिन शरीर झुकाना, जमीन पर लेटना या चौपाया बनना खतरनाक है।
- किसी बड़ी इमारत, घर, कार में छिप जाएं। (कार के टायर नहीं, उसकी धातु की मजबूत बाडी आपकी रक्षा करेगी) कार की बाड़ी या रेडियो हरगिज न छुएँ।
- घर में पहुंचने के बाद सबसे सुरक्षित स्थान है, सबसे निचली मंजिल के सबसे बड़े कमरे का मध्य भाग, फायर प्लेस और चिमनी से दूर।
- दरवाजे, खिड़की, रेडिएटर और बिजली के चूल्हे वगैरह से दूर रहें।

बिजली गिरने पर यदि तुरंत उपचार करें तो संभावना है कि घायल व्यक्ति पूरी तरह चंगा हो जाए। हृदय और फेफड़ों को जल्दी चालू न किया जाएगा तो मस्तिष्क के क्षतिग्रस्त होने का खतरा है। तथापि, बिजली की मार से मरे समझे गए कितने ही लोग ऐसे प्रत्युत्पन्नमति व्यक्तियों द्वारा पुनर्जीवित कर लिए गए, जो हृदय और फेफड़ों को पुनः सक्रिय करने की विधियों मे प्रशिक्षित थे।

अंत में एक तथ्य आपके लिए अत्यंत सांत्वनाकारी होगा यदि आपने बिजली चमकती देख ली तो समझिए, आप बच गए।

● झाँसी (उ.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र के अंक नियमित मिल रहे हैं। तो अप्रैल अंक आद्यंत देख गया था। मेरे पास कई बाल पत्रिकाएं आती हैं। बच्चों के मनोरंजन-ज्ञानवर्द्धन के साथ उन्हें सुसंस्कारित करने की दृष्टि से देवपुत्र की उपादेयता सर्वोपरि है, तभी तो पूरे देश के स्तर पर इसके पाठकों की संख्या शायद सर्वाधिक है। इसकी लोकप्रियता के पीछे आप जैसे प्रौढ़ सम्पादन-कला-मर्मज्ञ की निरंतर साधना ही बोलती है।

● *डॉ. राजेन्द्र पंजियार*
भागलपुर (बिहार)

चित्र पहेली

• चाँद मो. घोसी

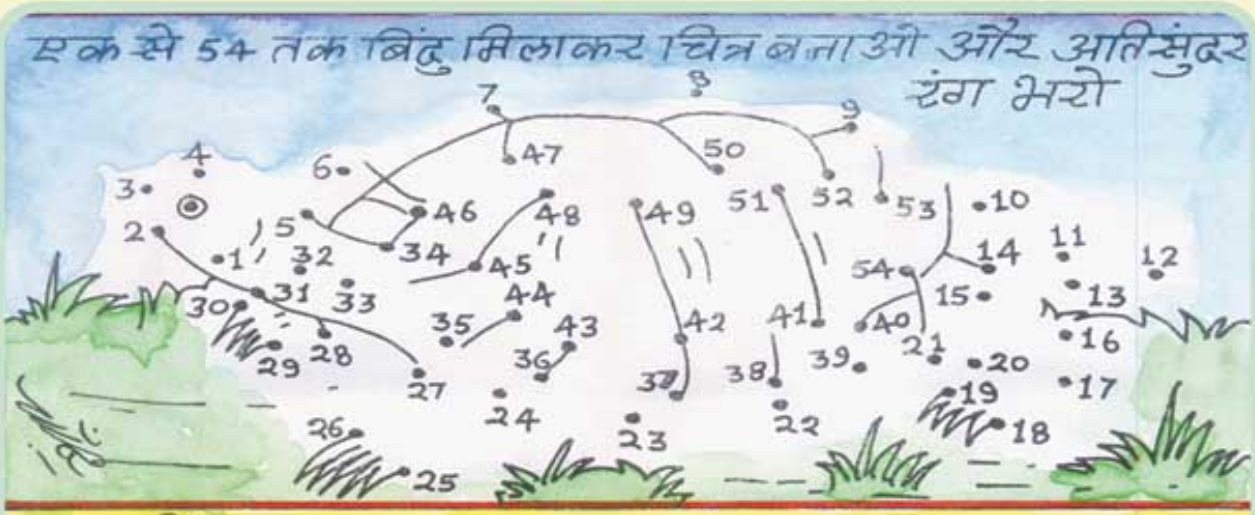

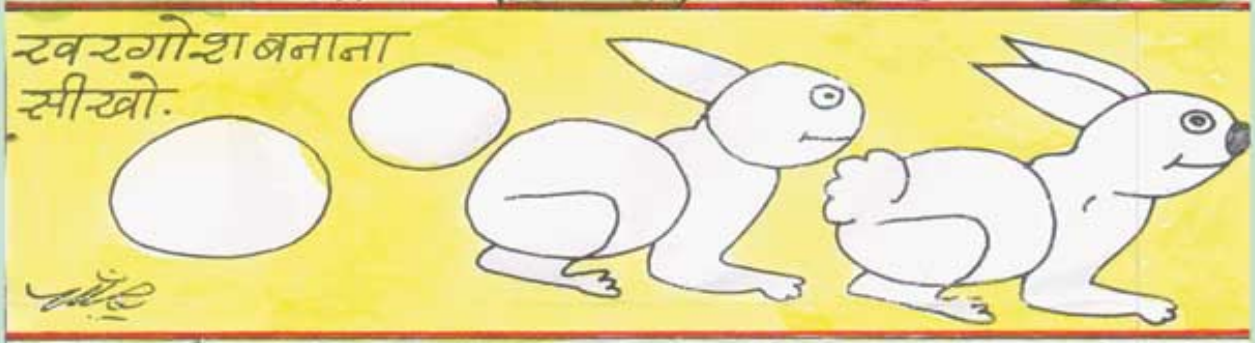

उत्तर :- 16 बंदर

माँ वर्षा

कविता : कुसुम अग्रवाल

माँ वर्षा ने शिशु पल्लव पर शीतल जल बरसाया
धूल-धूरसित तन को उसके मल मल कर नहलाया।
हरित वस्त्र पहनाकर सुन्दर, झूला उसे झुलाया
संग सखा के झूले पल्लव, मंद मंद मुस्काया।
फिर सोते शिशु-अंकुर को भी टप-टप बोल जगाया
गहन नींद से जागा शीशु झुक कर बाहर आया।
मातृ दुग्ध से पोषित शिशु ने जग में जीवन पाया
माँ को पुनः बुलाने अंकुर बना पेड़ लहराया।
माँ वर्षा बच्चों से मिलने हर सावन में आए
अपने संग खुशहाली के उपहार सदा वह लाए।
हो ऐसा संकल्प हमारा काम वही कर जाएं
माँ वर्षा बच्चों से मिलने हरदम यूं ही आए।

● अजमेर (राज.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) महाविष्णु ने (२) इरावान (३) स्वस्तिक तथा कमल
(४) बलुचिस्तान (पाकिस्तान) (५) बौद्ध
(६) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य (७) भारत का श्रेष्ठ लोहा
(८) नारायणराव भागवत (९) सम्राट गुहिल (१०) सोमनाथ

छोटे से बड़ा | १०, ६, १, ७, ३, २, ५, ४, ८, ९

विदेशी कौन?

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कोयल फिर बोली

कहानी : सुशील सरित

टिन्नी अभी सो रही थी कि उसे आँगन में से आती कूहू–कूहू की आवाज सुनाई दी। ''अरे! माँ ये कौन इतनी अच्छी–अच्छी आवाज में बोल रहा है'' टिन्नी ने आँखें मलते हुए माँ से पूछा। ''लो सात बज रहे हैं और तुम अभी तक सो रही हो'', माँ ने रसोई घर से ही टिन्नी को डाँट लगाई। ''उठ तो गई माँ! लेकिन ये तो बताओ कि ये बोल कौन रहा है, टिन्नी ने फिर पूछा। ''कहाँ कौन'' माँ को अभी भी टिन्नी की बात समझ में नहीं आई। ''अरे! माँ आँगन में से वो कूहू–कूहू की आवाज आ रही है वहीं'', टिन्नी ने फिर दुहराया। तभी कूहू–कूहू की आवाज दुबारा सुनाई दी। ''देखो–देखो माँ वही आवाज'' टिन्नी ने माँ को ध्यान दिलाया। ''अच्छा ये। ये तो कोयल है जब आती है और आम पकने लगते हैं तभी यह बोलती है'' माँ ने टिन्नी को पूरी बात समझाई। टिन्नी बिस्तर से उठकर आँगन में चली गई। अरे यह तो छोटी सी काली सी चिड़िया है। लेकिन यह बोलती है तो बड़ा अच्छा लगता है अगर ये चिड़िया उसके कमरे में आकर इतना मीठा गाना गाने लगे तो कितना अच्छा लगेगा, टिन्नी ने सोचा। शाम तक टिन्नी यही बात सोचती रही। दूसरे दिन टिन्नी की छुट्टी थी इसलिए टिन्नी पिताजी के साथ अपने मौसी के घर चली गई। मौसी का घर बहुत बड़ा था। वहाँ राजू भैया भी था। वह टिन्नी को लेकर पूरा घर घुमाने ले गया। मकान सचमुच बहुत बड़ा था। ''अरे यहाँ तो बहूत सारी चिड़ियाँ हैं, आँगन में पिंजरों में ढेर सारी चिड़ियों को देखकर टिन्नी खुशी से उछल पड़ी। हाँ माँ को अच्छा लगता हैं'' राजू ने समझाया। ''अरे यहाँ तो वो काली कोयल भी है जो बड़ा मीठा गाती है'' एक पिंजरे में कोयल को देखकर टिन्नी उछल पड़ी।

''कहो टिन्नी क्या देख रही हो'' टिन्नी को ढूँढती हुई मौसी वहीं आ गई। मौसी ये बोलने वाली चिड़ियाँ, टिन्नी अभी भी कोयल को ही देख रही थी। तुम्हें पसंद है तो तुम ले जाओ'', मौसी ने टिन्नी को कोयल का पिंजरा पकड़ा दिया। 'सच मौसी', हाँ –हाँ ले जाओ''

टिन्नी ने पिंजरा लाकर अपने कमरे में रख दिया। रातभर टिन्नी को नींद नहीं आई। सुबह हो तो कोयल बोलेगी तब कितना अच्छा लगेगा टिन्नी रात भर बिस्तर पर लेटे–लेटे यही सोचती रही।

सुबह की धूप जैसे ही खिड़की से आई टिन्नी अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गई। कोयल का पिंजरा मेज पर ही रखा था। धीरे–धीरे एक घंटा बीत गया लेकिन कोयल चुप बैठी रही। 'टिन्नी क्या बात है आज मंजन भी नहीं किया।' टिन्नी को बिस्तर से उठते न देख माँ ने रसोई से ही आवाज लगाई। माँ–माँ ये कोयल तो बोल ही नहीं रही हैं। ''क्या कह रही हो'' माँ को रसोई से टिन्नी की बात समझ में नहीं आई। ''अरे! यहाँ आओ तो बताऊँ।'' क्या बात है, माँ हाथ पोंछती हुई टिन्नी के पास आ गईं। देखो न माँ कल मौसी के घर से मैं इस कोयल को ले आई थी लेकिन इतनी देर हो गई ये बोल ही नहीं रही हैं, टिन्नी ने कोयल की तरफ इशारा किया।

''कोयल बोलेगी तो, लेकिन इसकी आवाज शायद तुम्हें अच्छी न लगे, जितनी कल वाली कोयल की लगी थी, माँ ने पिंजरे पर एक नजर डाली। ''क्यों माँ?'' टिन्नी को बात समझ में नहीं आई। ''देखो टिन्नी अगर तुम्हें कोई ऐसे ही पिंजरे में बंद कर दे तो तुम्हें कै सा लगेगा'' माँ ने टिन्नी के ध्यान सें देखते हुए पूछा। ''मुझे कोई क्यों बंद करेगा।'' टिन्नी को बात समझ में नहीं आई। मान लो बन्द कर दे तब माँ ने फिर सवाल किया।

''तब तो बहुत खराब लगेगा। टिन्नी ने कुछ सोचते हुए कहा। बस ऐसे ही इस कोयल को भी खराब लग रहा होगा, इसीलिए यह नहीं बोल रही है और मान लो बोलेगी भी तो वह उतना अच्छा तो नहीं ही होगा।'' माँ ने टिन्नी को समझाया और रसोई में चली गईं। माँ के जाने के बाद टिन्नी काफी देर तक पिंजरे को देखती रही फिर वह उठी और पिंजरे को उठाकर आँगन में आ गईं। आँगन में आकर उसने पिंजरे का छोटा सा दरवाजा खोल दिया। कोयल पहले तो पीछे हटी फिर दरवाजे से निकल कर फुर्र से उड़ कर आँगन की दीवार पर जा बैठी।

टिन्नी खड़ी–खड़ी उसे देखती रही पिंजरा उसने एक तरफ रख दिया पता नहीं कोयल कब बोलेगी सोचती हुई टिन्नी पिंजरा उठा कर कमरे की तरफ बढ़ी ही थी कि अचानक आँगन कूहू–कूहू की आवाज से गूँज उठा। कोयल फिर बोल रही थी और टिन्नी को लगा कि इस कोयल की आवाज तो और भी ज्यादा मीठी है।

● आगरा (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

विख्यात बाल साहित्यकार एवं प्रचुर बाल साहित्य के सर्जक **डॉ. परशुराम शुक्ल** की बाल कथा साहित्य समग्र श्रंखला की महत्वपूर्ण कृतियाँ।
प्रकाशक- विवेक पब्लिशिंग हाऊस धामाणी मार्केट चौड़ा रास्ता जयपुर (राज.)

राजारानी की बाल कहानियाँ

मूल्य २००/-

नैतिक बाल कहानियाँ

मूल्य १८०/-

प्रेरणादायक बाल कहानियाँ

मूल्य १८०/-

पंचतंत्र हितोपदेश और जातक की बाल कहानियाँ

मूल्य २६०/-

ऐतिहासिक बाल कहानियाँ

मूल्य २००/-

क्रांतिकारियों की बाल कहानियाँ

मूल्य २००/-

वैज्ञानिक बाल कहानियां -

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा रचित इन कहानियों में बाल मनोविज्ञान वैज्ञानिक दृष्टिकेण, तथ्य एवं कल्पना का सुन्दर समन्वय समसामायिक संदर्भों से जोड़ कर प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य २६०/-

हिन्दी एवं सिन्धी में समान रूप से कलम चलाने वाली लब्ध प्रतिष्ठ बाल साहित्यकार **रश्मि रमानी** द्वारा रचित
सिन्धी बाल साहित्य की हिन्दी में बहुमूल्य पुस्तकें

सिंध की लोक कथाएं

सिंधी भाषा की प्रसिद्ध २१ लोक कथाओं का हिन्दी में सरस सरल अनुवाद एवं रोचक प्रस्तुति।
प्रकाशन – नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नेहरू भवन, इंस्टीट्यूशनल एरिया फेज ।। बसंत कुंज, नई दिल्ली
मूल्य ४५/-

८७ बाल गीतों का अनुपम संकलन जिसका सिन्धी भाषा में मूल रूप देवनागरी और लिपी में तथा हिन्दी गीत के रूप में अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।
प्रकाशक– रश्मि रामानी, ३० पलसीकर कालोनी, मानस मेंशन, एफ एन २०१।। फ्लोर, जूनी इन्दौर के सामने, इन्दौर ४५२००५ (म.प्र.)

सिंधी बाल गीत

कविता : डॉ. अशोक गुलशन

बादल

नभ में घिर-घिर आये बादल,
सबको खूब डराये बादल।
मीठी जल की बूँदें लाकर,
सबकी प्यास बुझाएं बादल।
धरती को हरियाली देकर,
खूब दुआएं पाए बादल।
आठ माह के बाद लौटकर,
अपना रूप दिखाएं बादल।
सबका तन-मन शीतल करके,
सबके मन को भाये बादल।
गाँव हमारे आकर गुलशन
गर्मी दूर भगाएं बादल।

● बहराइच (उ.प्र.)

कविता : चैनराम शर्मा

वीर बहुटी

लगती हो तुम चलती-फिरती
एक नगीना वीर बहूटी।
धरती के अनगिनत जीव में
केवल तुम हो बड़ी अनूठी।
मेंहन्दी की उबटन की है या
रंगरेज के घर से छूटी?
किसी देवकन्या के माथे
की बिन्दिया बन तो ना टूटी?
चली कहाँ से और कहाँ को
जाओगी यों रूठी-रूठी?
किस मंजिल की ओर बढ़ी हो
वीर बहूटी, वीर बहूटी?

● चन्देसरा (राज.)

बहरू और बीन

कहानी : डॉ. मंजरी शुक्ला

चितवन वन की घाटियों के ऊपर सदैव काले, नीले, सफेद और गुलाबी रंग के बादल मंडराया करते थे...आखिर मंडराए भी क्यों ना... रंग बिरंगे फूलों से लदे हरे भरे वृक्षों के कारण ठंडी हवाएं उन्हें इस जंगल तक खींच ही लाती थीं... इसी जंगल में बहुत सारे साँप रहा करते थे...वे यहाँ आराम से रहते थे, क्योंकि इस जगह के बारे में कोई नहीं जानता था...वे सभी साँप आपस में खेलते, पेड़ों पे लटकते, नदी में तैरते और खूब धमा चौकड़ी मचाते। पर इन्हीं सांपों के बीच में एक चमकीला सा काला सांप था खूब लम्बा और चिकना सा दिखने वाला... वो जब अपना बड़ा सा फन निकालता तो और भी खूबसूरत लगता। पर उसके साथ कोई भी ना तो खेलना पसंद करता था और ना ही बात करना... क्योंकि वो सुन नहीं सकता था। बहरा होने के वजह से अब उसे बहरू बहरू कहकर चिढाते और दूर भागते पर वो किसी की भी बात का बुरा नहीं मानता था। उन्हीं सांपों में सबसे शैतान नाम था पीलू, जो बहरू के आते ही खुद भी दूर भागता और अपने दोस्तों को भी बहरू के साथ खेलने से मना करता। जब वो पीलू के पास जाता तो पीलू कहता– ''हम तुम्हें अपने साथ नहीं खिला सकते... जब भी हम कुछ कहते हैं तुम सुन तो पाते नहीं और इसलिए हमारा खेल खराब हो जाता है।''

धीरे धीरे बहरू उनके हाव भाव से समझ गया कि उसके बहरे होने के कारण उसे कोई नहीं खिलाता। वह एक दिन हिम्मत करके पीलू के पास आया और बोला– ''अगर मैं सुन

नहीं सकता हूँ तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है... मैं तो तुम सब से बहुत प्यार करता हूँ।''

ये सुनकर पीलू हँसते हुए बोला– ''प्यार तो हम भी तुमसे करते हैं, पर तुम्हें अपने साथ खिला नहीं सकते... तुम्हारे रहने से हमारा सारा खेल बिगड़ जाता है।''

और ये कहकर पीलू वहाँ से अपने दोस्तों के साथ चला गया।

बेचारा बहरू दुखी होते हुए वहाँ से चला आया। अब बहरू ने पीलू और उसके दोस्तों के पास जाना बंद कर दिया।

बहरू अपने घर में ही रहता या अपने घर के आसपास घूमता। इसी तरह से कुछ दिन बीत गए।

एक दिन पीलू देर तक सोता रह गया और दोपहर में जब वो जंगल के हाल चाल लेने निकला तो ठंडी हवा में आकर उसका मन खुश हो गया।

पर उसे ये देखकर आश्चर्य हो रहा था कि जंगल बिल्कुल सुनसान पड़ा था... जबकि ऐसे मौसम में तो उसके दोस्त हमेशा नदी के किनारे घंटों खेलते रहते थे। वो सोच रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है कि पूरे जंगल में उसे कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। पीलू इधर–उधर देखते हुए चला जा रहा था और बीच बीच में सोचता कि आखिर चले कहाँ गए सब लोग...?

थोड़ा और आगे जाने पर उसे कुछ आदमियों की आवाजें सुनाई पड़ी, उन आदमियों की पोशाकें अजीब सी थी। उन्होंने कुर्ते और लुंगी पहनी थी और सभी के हाथों में एक एक बड़ा सा झोला लटक रहा था। पीलू ने थोड़ा सा और पास जाने पर देखा कि उन सभी के पास बीन भी थी और जमीन पर रखे थैलों में कुछ हिल रहा था। पीलू ये देखकर डर के मारे कांपने लगा। वो समझ गया कि हो ना हो...ये वही सपेरे हैं, जिनसे हमेशा दूर रहने के लिए कहा जाता है...इन्हीं लोगों ने बीन की आवाज से सभी सांपों को कैद कर लिया है...पीलू बहुत घबरा गया... वो सोचने लगा कि अब मैं क्या करूँ... अगर उनके पास जाता हूँ तो वो मुझे भी बंदी बना लेगें.. और अगर नहीं जाता हूँ तो ये सभी को इन बोरों में भरकर ले जाएंगे... तभी अचानक उसे बहरू की याद आई और वो तेजी से उसके घर की तरफ चल देता है। जब वो बहरू के घर पहुँचता है, तो बहरू बाहर ही उदास सा बैठा हुआ था... पीलू को उसके और उसके सभी दोस्तों का व्यवहार याद आ गया और उसे अपने व्यवहार के ऊपर बहुत पछतावा हुआ। उसे दुःख के मारे रोना आ जाता है कि हमेशा ही उन सभी ने बहरू को भगाया और दुत्कारा... आज भला बहरू उनकी मदद क्यों करने लगा... पर पीलू धीरे से बहरू के सामने जा खड़ा हो गया।

हमेशा की तरह सीधे सरल बहरू ने पीलू का स्वागत इस बार भी मुस्कुराकर ही किया... पीलू ने उसे इशारे से अपने पीछे आने के लिए कहा।

बहरू की समझ में कुछ नहीं आया पर वो तुरंत पीलू के साथ चल दिया।

रास्ते में पीलू उसे इशारों में अपनी बात समझाने की कोशिश करता रहा जिससे बहरू ये तो जान गया कि सभी सांप मुसीबत में हैं, पर वो पूरी बात नहीं समझ पा रहा था। जब वे दोनों उस जगह पर पहुँचते हैं तो पीलू बहरू को सपेरे और वे झोले दिखाता है जिनमें सांप बंद होते हैं।

बहरू तुरंत सारा खतरा भांप जाता है और सरपट भागता हुआ उन सपेरों के आगे गुस्से में अपना फन फैलाकर खड़ा हो जाता है। सपेरे भयभीत होकर बीन

बजाना शुरु कर देते हैं पर भला बहरू को बीन कहाँ सुनाई दे रही थी। वो गुस्से में और तेजी से फुफकारता है।

उनमें एक सपेरा दूसरे से कहता हैं...इस साँप पर तो बीन की आवाज का कोई असर ही नहीं हो रहा है।

तभी दूसरा सपेरा भागते हुए बोलता है– ''अगर अपनी जान बचाना चाहते हो तो यहां से तुरंत चलो।''

उसकी बात सुनकर सभी सपेरे डर के मारे और बीन और झोला वहीं छोड़कर भाग जाते हैं।

उनके जीते ही पीलू और बहरू फटाफट झोला खोलकर सभी साँपों को बाहर निकाल देते हैं।

जब उन्हें पता चलता है कि बहरू ने ही उन सबकी जान बचाई है तो वे सब उसके प्रति किए गए व्यवहार से शर्मिंदा हो उठते है और उसके गले लग जाते हैं।

बहरू खुश होते हुए कहता है –''मुझे एक विज्ञापन से कानों की मशीन के बारे में पता चला है, जिससे मैं अब सुन भी सकूँगा...।''

सभी साँप एक दूसरे की तरफ आश्चर्य से देखते है और जोरों से हँसते हुए एक साथ चिल्लाते है– ''नहीं...और फिर उसके बाद तो बहरू कभी अकेला नहीं रहा आखिर अब वो जंगल का हीरो जो बन चुका था।

● पानीपत (हरियाणा)

– जीव विज्ञानियों के अनुसार प्रायः सारे सांप बहरे ही होते हैं वे बीन की आवाज सुनकर नहीं उसको हिलते देखकर डोलता है। जिसे हमें सांप का बीन पर नाचना मान बैठते हैं।

किन्तु कथाएँ तो हमें कल्पना लोक की सेर कराती हैं ना?

– सम्पादक

।। बाल प्रस्तुति ।।

रिमझिम रिमझिम

कविताः प्रिया देवांगन :'प्रियू'

रिमझिम रिमझिम गिरता पानी
छमछम नाचे गुड़िया रानी
चमक रही है चमचम बिजली
छिप गई देखो प्यारी तितली
घनघोर घटा बादल में छाई
सबके मन में खुशियाँ लाई
नाच रहे हैं वन में मोर
चातक पपीहा करते शोर
चारों तरफ हरियाली छाई
हर किसान के मन में भाई

● पंडरिया (छ.ग.)

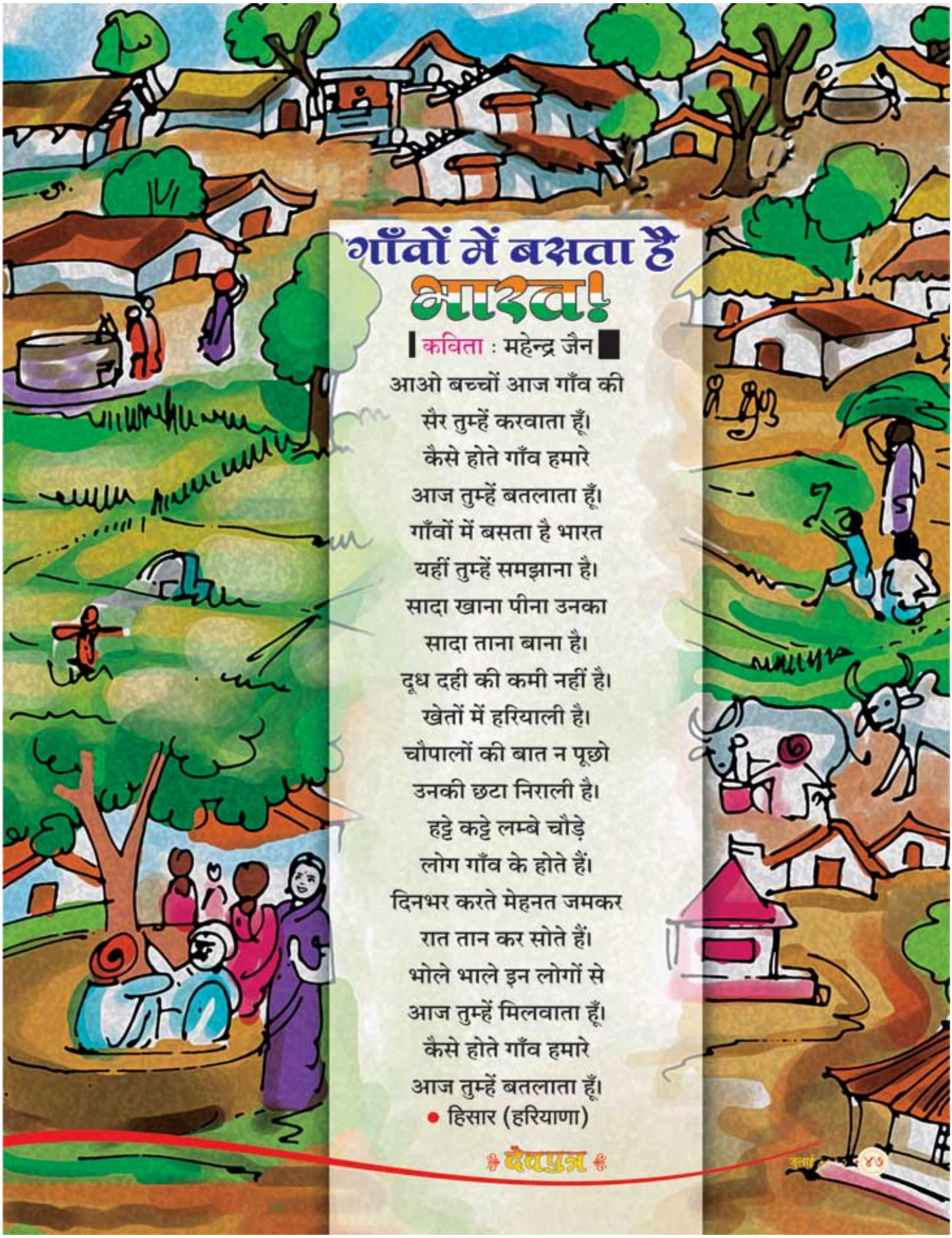

गाँवों में बसता है भारत!

कविता : महेन्द्र जैन

आओ बच्चों आज गाँव की
सैर तुम्हें करवाता हूँ।
कैसे होते गाँव हमारे
आज तुम्हें बतलाता हूँ।
गाँवों में बसता है भारत
यहीं तुम्हें समझाना है।
सादा खाना पीना उनका
सादा ताना बाना है।
दूध दही की कमी नहीं है।
खेतों में हरियाली है।
चौपालों की बात न पूछो
उनकी छटा निराली है।
हट्टे कट्टे लम्बे चौड़े
लोग गाँव के होते हैं।
दिनभर करते मेहनत जमकर
रात तान कर सोते हैं।
भोले भाले इन लोगों से
आज तुम्हें मिलवाता हूँ।
कैसे होते गाँव हमारे
आज तुम्हें बतलाता हूँ।

• हिसार (हरियाणा)

वे देवपुत्र लिखते लिखते देवपुत्र हो गए

– श्री नन्दू भैया

श्री अष्ठाना को देवीश्री अहिल्या नगर गौरव सम्मान

इन्दौर। दिनांक ३० मई २०१७ को एक अत्यंत भावभीने भव्य समारोह में देवपुत्र के यशस्वी संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को **देवी श्री अहिल्या नगर गौरव सम्मान २०१७** से अलंकृत किया गया। स्थानीय जाल सभागृह में देवी श्री अहिल्या जन्मोत्सव समिति इन्दौर द्वारा लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर के २९२वें जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर आयोजित इस भव्य अलंकरण समारोह में श्री लक्ष्मणराव नवाथे (विभाग संघचालक) श्री नन्दकुमार चौहान (प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा), श्रीमती मालिनी गौड़ (महापौर एवं विधायक), श्री नरेन्द्र धाकड़ (कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय), श्री श्रीराम आरावकर (राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री, विद्याभारती) एवं सुश्री उषा ठाकुर (संस्था की संरक्षक एवं विधायक) की गरिमापूर्ण उपस्थिति में अध्यात्मिक गुरु श्री श्रीराम जी कोकजे की पावन सान्निध्य में श्री अष्ठाना जी को उनके समग्र सामाजिक शैक्षिक एवं साहित्यिक अवदान के लिए **एक लाख एक हजार एक सौ ग्यारह रुपए** की नगद सम्मान निधि के साथ अभिनंदन पत्र, श्रीफल, शाल, स्मृति चिन्ह प्रदान कर होलकरी पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया गया।

नगर एवं आसपास के क्षेत्रों से पधारे गणमान्य नागरिकों से खचाखच भरे इस आयोजन में डॉ. मुकेश मोढ़ ने श्री अष्ठाना जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं मंचस्थ अतिथियों ने अपने भाव सुमन अर्पित किए। व्यक्तिगत गीत कु. धात्री त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। संचालन श्रीमती अलका भार्गव ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन श्रीमती मेधा खिरे ने किया एवं प्रो. योगेन्द्र नाथ शुक्ल ने प्रस्तावना एवं संस्था परिचय कराया। आभार श्री सुनील मतकर ने माना। मंच पर श्री मानवेन्द्र त्रिवेदी संस्था अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। श्री जयंत भिसे एवं डॉ. विकास दवे की आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

चुटकुले

ऋषिमोहन श्रीवास्तव, ग्वालियर

मालिक (क्रोध करते हुए) – ''क्यों, मंहगाई के जमाने में रोटी पर इतना ज्यादा घी लगाते हो?''

नौकर (माफी मांगते हुए) ''मालिक, मुझसे गलती हो गई मेरी वाली रोटी आपके पास आ गई है।''

****

टिकिट चेकर – ''बेटा, तुम्हारी उम्र कितनी है?''

बालक – ''जी, १४ वर्ष घर में, स्कूल में १२ वर्ष और ट्रेन में ८ वर्ष।''

****

मोहनलाल मागो, दिल्ली

लहुलुहान मित्र से दूसरे मित्र ने पूछा ''क्या हुआ?''

''पत्नि ने मारा है!''

''आखिर क्यों?''

''उसके माता–पिता आए हुए थे उसने मुझे कहा जाओ बाजार से इनके लिए कुछ ले आओ।''

''तो इसमें कोई बड़ी बात नहीं है।''

''नहीं यार, मैं टैक्सी ले आया था।''

****

डाक्टर –''आपको निमोनिया से कभी तकलीफ हुई थी क्या?''

मरीज – जी एक बार

डाक्टर – कब ?

मरीज – जब टीचर ने निमोनिया की स्पेलिंग पूछी थी।

देवपुत्र प्रसार सम्मान

जोधपुर। देवपुत्र की प्रसार संख्या में वृद्धि के लिए राजस्थान के निम्नांकित विद्यालयों को सम्मानित किया गया। यह सम्मान देवपुत्र के राजस्थान प्रतिनिधि श्री **मदनलाल जी अग्रवाल** अपनी ओर से प्रदान करते हैं।

क्र.	सम्मानित विद्यालय का नाम जोधपुर प्रांत	अंक संख्या
1	प्रांतीय कार्यालय जोधपुर	5857
2	नवीन आविमं पिण्डवाड़ा	454
3	आविमं बालक शिवगंज	135
4	आविमं बालिका शिवगंज	108
5	आविमं पोसालिया	150
6	आविमं मा. बरलूट	221
7	एम. शांतिलाल मेहता स. वि. नि. पाली	101
8	मोतीचंद सेठिया आविमं सोजत शहर	352
9	हंस निर्वाण सरस्वती शिशु वाटिका पाली	114
10	रायगांधी मा. आविमं तखतगढ़	128
11	आविमं मा. आई.ओ.सी. कॉलोनी बाली	163
12	सरस्वती विद्या मंदिर मा. बालक सादड़ी	213
13	आविमं उ. प्रा. देसूरी	132
14	आविमं बालिका मा. सुमेरपुर	289
15	आविमं मा. रानी स्टेशन	106
16	आविमं उ. मा. भीनमाल	518
17	आविमं उ. प्रा. जसोल	111
18	आविमं मा. फलसूण्ड, तह. भणियाणा	119
19	शारदा बालिका निकेतन उ. मा. शारदापुरम्	105
20	पं. बच्छराज व्यास उ. मा. आविमं. सुपका रोड डीडवाना	127
21	पं. बच्छराजव्यास आविमं. बालिका डीडवाना	119
	योग	3765

क्र.	सम्मानित विद्यालय का नाम जयपुर प्रांत	अंक संख्या
1	आविमं मा. सपोटरा	116
2	गोपालकृष्ण शास्त्री मा. आविमं, सुजानगढ़	289
3	श्रीमती सूरजकुमारी गाड़ोदिया उ. प्रा. बालिका सुजानगढ़	118
4	श्रीमती सूरजकुमारी गाड़ोदिया उ. मा. सुजानगढ़	128
5	श्री. रामगोपाल गाड़ोदिया उ. मा. आविमं सुजानगढ़	450
6	मा. आविमं. छापर	145
	योग	1246

क्र.	सम्मानित विद्यालय का नाम चित्तौड़गढ़ प्रांत	अंक संख्या
1	विद्या निकेतन मा. चित्तौड़गढ़	400
2	आविमं सुशीलादेवी मा. छीपाबड़ौद	155
3	आविमं मा. माधव नगर छबड़ा	153
	योग	708

क्र.	सम्मानित जिला	अंक संख्या
1	जिला सिरोही	1068
2	जिला बाली	1218
3	जिला चुरू	1655
	योग	3941

सांस्कृतिक पहेलियां

सीताराम पाण्डेय

जीवन में सिर्फ एक बार ही
मिथ्या बोल हुआ बदनाम।
द्वापर युग में युद्ध किया था
बच्चो, कह सकते हो नाम?

किसका भोजन केवल दुर्वा
बात-बात में आता क्रोध।
किसने शापा कण्व-सुता को
बच्चो, कहो नाम तुम शोध?

किसने बेधा मीन चक्षु को
किसे धनुर्धर जग जाना?
कौन रहा वर्षों कानन में
किसने महासमर ठाना?

कौन साथ थे दोनों जन्मे
किनने पिता नहीं पहचाना?
किनका जन्म हुआ जंगल में
कौन पिता से दंगल ठाना?

जन्म लिया किसने धरती से
किसको पति दिया बनवास?
किसका हरण हुआ कानन से
पहचानो तुम करो प्रयास?

किसने तोड़ा शंकर-धनुही
किसको पिता दिया वनवास?
त्रेता युग में युद्ध किया था
नाम बताओ तो शाबास।

रवि समान तेजस्वी जन्मा
किंतु नदी में गया बहाया
जन्म लिखा रानी से लेकिन
सूत पुत्र था कहलाया?

● रमणा (बिहार)

सही उत्तर - दुर्वासा ऋषि, लवकुश, रामचन्द्र, युधिष्ठिर, अर्जुन, सीता, कर्ण।

शुल्क वृद्धि सूचना

आत्मीय ग्राहको !

आप सबका देवपुत्र के प्रति स्नेह और दुलार ही कारण है कि देवपुत्र अपने निरंतर प्रकाशन के ३७ वर्ष पूरे कर रहा है। इसके बहुरंगी कलेवर, सामग्री और साज सज्जा को पसंद करने के लिए हम आपके आभारी हैं।

कागज मुद्रण और प्रेषण की लागत में निरंतर वृद्धि से विवश होकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः इसकी सदस्यता दरों में वृद्धि करने का निर्णय हुआ है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास की बैठक में लिए निर्णयानुसार आगामी सत्र से इसकी सदस्यता दरें इस प्रकार रहेंगी।

एक अंक	**२०/- रु.**
वार्षिक सदस्यता	**१८०/-रू.**
त्रैवार्षिक सदस्यता	**५००/-रू.**
पंचवार्षिक सदस्यता	**७५०/-रू.**
आजीवन सदस्यता	**१४००/-रू.**
सामूहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	**१३०/-रू. प्रति सदस्य**

आलोक :

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।

- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'देवपुत्र' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

- संपादक

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva
Naya Daur - Nayi Raunak

LET'S LIGHT UP
YOUR LIFE.

Co-promoter of Nippo
presents

MITVA

Off-grid solar range

- Solar Panel
- Solar Battery
- Solar D.C. Fan
- Solar Charge Controller
- Solar Inverter
- Solar Street-Light

Now light up your Homes, Shops and Schools with Solar energy

A whole range of reliable
and portable solar products,
that suits all your needs.

To avail the products of Mitva, please reach us at - Softtech Enterprises
Opp. Manseykhank, Near petrol pump, Leh Ladakh (J&K), Contact details – 9797468102, 9469234378
Irfan Ahmad (zonal manager) - 9797917276

RAL
Global brands. Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक – कृष्णकुमार अष्ठाना